किसान कभी हार नहीं मानता,
क्योंकि हर मौसम उसके लिए एक नई शुरुआत है।

मेरीखेती

मई 2026 I मूल्य: ₹49

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलिहान	05 - 14
बागवानी फसलें	14 - 23
मशीनरी	24 - 35
कृषि सलाह	37 - 39
पशुपालन–पशुचारा	39 - 44
सम्पादकीय	44 - 47

विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

संपादकीय

गर्मी के मौसम में गहरी जुताई का महत्व

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में खेती केवल उत्पादन का माध्यम नहीं, बल्कि करोड़ों किसानों की आजीविका का आधार है। बदलते मौसम, घटती मिट्टी की उर्वरता और बढ़ती लागत के इस दौर में किसानों के लिए सही कृषि तकनीकों को अपनाना बेहद जरूरी हो गया है। ऐसी ही एक महत्वपूर्ण और प्रभावी तकनीक है— गर्मी के मौसम में गहरी जुताई।

गर्मी के दिनों में जब खेत खाली रहते हैं, तब अधिकांश किसान उन्हें यूं ही छोड़ देते हैं। लेकिन यही समय मिट्टी को सुधारने और आगामी फसल के लिए मजबूत आधार तैयार करने का सबसे उपयुक्त अवसर होता है। गहरी जुताई इस दिशा में एक सरल लेकिन अत्यंत लाभकारी उपाय है, जिसे अपनाकर किसान अपनी उपज और आय दोनों में वृद्धि कर सकते हैं।

गहरी जुताई का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह मिट्टी की ऊपरी सख्त परत को तोड़ देती है। समय के साथ खेत की मिट्टी सख्त हो जाती है, जिससे जड़ों का विकास बाधित होता है और पानी का समुचित अवशोषण नहीं हो पाता। जब किसान गर्मी में गहरी जुताई करते हैं, तो यह कठोर परत टूट जाती है और मिट्टी भुरभुरी बनती है। इससे न केवल फसल की जड़ों को फैलने में आसानी होती है, बल्कि पानी भी गहराई तक पहुंच पाता है।

इसके अलावा, गहरी जुताई का एक महत्वपूर्ण पहलू कीट और रोग नियंत्रण से भी जुड़ा है। मिट्टी के अंदर छिपे कई हानिकारक कीट, उनके अंडे और रोगजनक जीव गर्मी के दौरान सतह पर आ जाते हैं। तेज धूप और उच्च तापमान के कारण ये नष्ट हो जाते हैं, जिससे अगली फसल में कीटों और बीमारियों का खतरा काफी हद तक कम हो जाता है।

खरपतवार नियंत्रण में भी गहरी जुताई की भूमिका अहम है। खेत में उगने वाले अनचाहे पौधे, जो फसल के पोषक तत्वों को चुरा लेते हैं, जुताई के दौरान नष्ट हो जाते हैं। इससे खेत साफ रहता है और मुख्य फसल को बेहतर पोषण मिलता है।

जल संरक्षण के दृष्टिकोण से भी यह तकनीक बेहद उपयोगी है। गहरी जुताई के कारण मिट्टी में पानी धारण करने की क्षमता बढ़ती है। जब बारिश होती है, तो पानी बहकर जाने के बजाय जमीन में समा जाता है, जिससे नमी लंबे समय तक बनी रहती है और सिंचाई की जरूरत कम पड़ती है।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउन्डर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एव कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

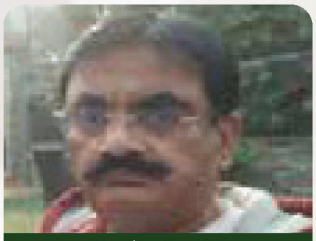

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एव प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

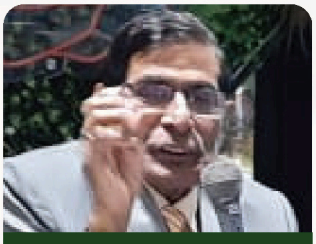

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइटिस्ट, IARI, पूसा

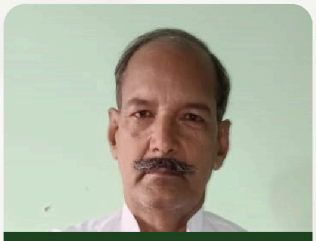

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

मूंग की खेती कैसे करें: उन्नत तकनीक और किस्मों की पूरी जानकारी

मूंग एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है, जिसे भारत में जायद (गर्मी) और खरीफ दोनों मौसमों में सफलतापूर्वक उगाया जाता है। यह कम समय में तैयार होने वाली फसल है, जिससे किसान जल्दी मुनाफा कमा सकते हैं। पोषण की दृष्टि से मूंग काफी समृद्ध होती है, क्योंकि इसमें लगभग 24–26% प्रोटीन, 55–60% कार्बोहाइड्रेट और थोड़ी मात्रा में वसा पाई जाती है। इसके अलावा, यह फसल मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभाती है। मूंग की जड़ों में उपस्थित ग्रंथियां वायुमंडल की नाइट्रोजन को स्थिर कर मिट्टी में मिलाती हैं, जिससे अगली फसल को लाभ मिलता है। फसल कटने के बाद इसके अवशेष भी खेत में मिलकर जैविक पदार्थ बढ़ाते हैं, जिससे भूमि की गुणवत्ता सुधरती है।

भूमि और जलवायु

मूंग की खेती विभिन्न प्रकार की जलवायु में की जा सकती है, लेकिन अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। ऐसी मिट्टी में पौधों की जड़ें आसानी से विकसित होती हैं और उत्पादन बेहतर मिलता है। इसके अलावा, मिट्टी में जैविक पदार्थों की पर्याप्त मात्रा होना जरूरी है, जिससे पौधों को आवश्यक पोषण मिल सके। यह फसल सिंचित और असिंचित दोनों परिस्थितियों में उगाई जा सकती है, लेकिन जलभराव से बचाव करना बहुत जरूरी होता है, क्योंकि अधिक पानी से जड़ों में सड़न की समस्या उत्पन्न हो सकती है।

उन्नत किस्में

मूंग की अच्छी पैदावार के लिए सही किस्म का चयन बहुत महत्वपूर्ण होता है। बाजार में कई उन्नत किस्में उपलब्ध हैं, जैसे नरेंद्र मूंग-1, पंत मूंग-2, पंत मूंग-4, एच.यू.एम-6, सुनैना, जवाहर मूंग-45 और जवाहर मूंग-70। इन किस्मों का चयन स्थानीय जलवायु, मिट्टी की स्थिति और उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखकर करना चाहिए, ताकि बेहतर उत्पादन प्राप्त हो सके।

बीज की मात्रा और बुवाई विधि

मूंग की बुवाई मौसम के अनुसार की जाती है। गर्मी के मौसम में प्रति एकड़ लगभग 8 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है, जबकि खरीफ मौसम में बीज की मात्रा थोड़ी अधिक रखी जाती है। बुवाई हमेशा

कतारों में करनी चाहिए, जिसमें कतार से कतार की दूरी 20–25 सेमी रखी जाती है। इससे पौधों को पर्याप्त जगह मिलती है और खेत की देखभाल आसान हो जाती है। बुवाई से पहले बीजों का उपचार करना बेहद जरूरी होता है। इसके लिए कार्बेन्डाजिम से बीज उपचार करने से बीज जनित रोगों से सुरक्षा मिलती है और अंकुरण अच्छा होता है।

बुवाई का सही समय

जायद मौसम में मूंग की बुवाई रबी फसलों की कटाई के तुरंत बाद कर देनी चाहिए, बशर्ते सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो। वहीं, खरीफ मौसम के लिए बुवाई का सही समय जून के दूसरे पखवाड़े से जुलाई के पहले पखवाड़े तक माना जाता है। समय पर बुवाई करने से फसल का विकास बेहतर होता है और उत्पादन में वृद्धि होती है।

खेत की तैयारी

मूंग की अच्छी फसल के लिए खेत की उचित तैयारी जरूरी होती है। सबसे पहले मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करनी चाहिए, जिससे मिट्टी की ऊपरी परत पलटकर भुरभुरी हो जाए। इसके बाद 2–3 बार कल्टीवेटर या देसी हल से जुताई करके मिट्टी को समतल और नरम बनाया जाता है। अंत में सुहागा चलाकर खेत को पूरी तरह समतल कर लिया जाता है, जिससे बुवाई और सिंचाई में सुविधा होती है।

खाद और उर्वरक प्रबंधन

मूंग दलहनी फसल होने के कारण अधिक नाइट्रोजन की जरूरत नहीं होती, क्योंकि यह स्वयं नाइट्रोजन स्थिरीकरण करती है। फिर भी संतुलित पोषण के लिए प्रति एकड़ लगभग 10 किग्रा नाइट्रोजन, 20 किग्रा फॉस्फोरस और 8–10 किग्रा पोटाश देना लाभकारी होता है। जिन क्षेत्रों में गंधक की कमी हो, वहां 8 किग्रा गंधकयुक्त उर्वरक का उपयोग करना चाहिए। इन सभी उर्वरकों को बुवाई के समय या उससे पहले मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए, ताकि पौधों को शुरुआती अवस्था में ही पर्याप्त पोषण मिल सके।

सिंचाई और जल प्रबंधन

खरीफ मौसम में मूंग की फसल को सामान्यतः अतिरिक्त सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वर्षा से ही पानी की पूर्ति हो जाती है। लेकिन खेत में जलभराव नहीं होने देना चाहिए, क्योंकि इससे जड़ गलन जैसी समस्याएं हो सकती हैं। जायद मौसम में, जहां तापमान अधिक होता है, वहां 15–20 दिनों के अंतराल पर 3–4 बार सिंचाई करना आवश्यक होता है। सही समय पर सिंचाई करने से पौधों की वृद्धि अच्छी होती है और उत्पादन बढ़ता है।

खरपतवार नियंत्रण

मूंग की फसल में खरपतवार नियंत्रण बेहद जरूरी है, क्योंकि यह पौधों के पोषक तत्वों और पानी के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 15–20 दिन बाद करनी चाहिए और दूसरी 40–45 दिन बाद। इसके अलावा, रासायनिक नियंत्रण के लिए फ्लूएक्लोरीन 45 EC का छिड़काव भी किया जा सकता है, जिससे खरपतवारों पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है।

कीट एवं रोग नियंत्रण

मूंग की फसल में कई प्रकार के कीट और रोग लग सकते हैं, जिनका समय पर नियंत्रण करना जरूरी होता है। चूसक कीट जैसे एफिड्स और व्हाइटफ्लाई से बचाव के लिए थायोमेथॉक्साम का छिड़काव किया जाता है। पत्ती धब्बा रोग से बचने के लिए कार्बेन्डाजिम का उपयोग प्रभावी रहता है। वहीं, जड़ गलन रोग से बचाव के लिए खेत में जल निकासी की अच्छी व्यवस्था करनी चाहिए और जरूरत पड़ने पर कापर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव करना चाहिए। सही प्रबंधन से फसल को नुकसान से बचाया जा सकता है।

उत्पादन और लाभ

मूंग की औसत उपज सामान्य परिस्थितियों में 4–5 क्विंटल प्रति एकड़ होती है, लेकिन यदि उन्नत

MASSEY FERGUSON

TAFE
65 YEARS

MASTER OF PUDDLING

7052 L

SPLASH PROTECT FENDER

FULLY SEALED 4WD FRONT AXLE

20% LESSER WEIGHT COMPARED TO TRADITIONAL 4WD TRACTORS

तकनीकों और उचित देखभाल के साथ खेती की जाए, तो यह उत्पादन 7–8 क्विंटल प्रति एकड़ तक बढ़ाया जा सकता है। यह फसल कम समय में तैयार हो जाती है, जिससे किसान जल्दी लाभ कमा सकते हैं। साथ ही, यह मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायक होती है, जिससे अगली फसलों की पैदावार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मूंग की खेती कम लागत, कम समय और अधिक लाभ देने वाली खेती मानी जाती है। यदि किसान वैज्ञानिक तरीके अपनाकर सही समय पर बुवाई, संतुलित उर्वरक प्रबंधन और कीट नियंत्रण करें, तो वे अच्छी पैदावार के साथ-साथ मिट्टी की गुणवत्ता भी सुधार सकते हैं। यह फसल न केवल आर्थिक रूप से फायदेमंद है, बल्कि टिकाऊ खेती के लिए भी एक बेहतरीन विकल्प है।

देशी कपास की उन्नत किस्में

कपास एक प्रमुख रेशा फसल है। कपास सफेद सोने के नाम से मशहूर है। इसके अंदर नैचुरल फाइबर विघमान रहता है, जिसके सहयोग से कपड़े बनाए जाते हैं। भारत के कई इलाकों में कपास की खेती काफी बड़े स्तर पर की जाती है। इसकी खेती देश के सिंचित और असिंचित इलाकों में की जा सकती है। इस लेख में हम आपको कपास की खेती की संपूर्ण जानकारी देने वाले हैं, भारत में कपास की दो किस्मों की खेती की जाती है देशी कपास और अमेरिकन कपास। देशी कपास की खेती भारत में कई स्थानों पर की जाती है, भारत में इसकी कई किस्में मौजूद है। इस लेख में हम आपको देशी कपास की किस्मों के बारे में जानकारी देंगे।

1. उन्नत किस्में (Advanced Varieties):

- HD 107: देशी कपास की ये किस्म हिसार में विकसित की गयी, ये कपास की रोग प्रतिरोधी किस्म है , इसका रेशा लंबाई भी काफी अच्छी, होती है देशी कपास की ये किस्म हरियाणा-पंजाब-राजस्थान के लिए उपयुक्त।
- HD 432: ये देशी कपास की सूखा सहनशील किस्म है, इसका मध्यम रेशा काफी अच्छा होता है, उत्तरी भारत के शुष्क क्षेत्रों हेतु ये किस्म उपयुक्त है।
- RG 18: उड़ीसा व आंध्रप्रदेश के लिए ये किस्म तैयार की गयी है साथी ही यह किस्म रोगरोधी और अच्छी गुणवत्ता वाली है
- RG 8: दक्षिण भारत के लिए, उच्च उत्पादन और रोग प्रतिरोधक।
- DS 5: इस किस्म को कर्नाटक-महाराष्ट्र में उपयुक्त, कीट व रोग सहनशील माना जाता है ।
- LD 230, 327, 491: पंजाब में विकसित की गयी है, इस किस्म से अच्छी गुणवत्ता और उत्पादकता मिलती है।

2. प्रचलित किस्में (Popular Varieties):

- HD 123, HD 324: उत्तरी भारत के लिए, बेहतर उत्पादन व रेशा वाली किस्म है।
- RG 542: ये दक्षिण भारत में प्रचलित, सूखा सहनशील और अच्छा फाइबर देने वाली किस्म है।

3. संकर किस्में (Hybrid Varieties):

- AAH 1: देसी कपास का पहला संकर, उच्च उपज, बेहतर रेशा।
- राज DH 9: राजस्थान के लिए, रोगरोधी और अधिक उत्पादन।
- HHH 223, 287: हरियाणा हेतु, अच्छा फाइबर व उत्पादन।
- KR 64: कर्नाटक में विकसित, कीट प्रतिरोधी, उच्च उपज।
- CICR 2: नागपुर से विकसित, रोग सहनशील, संकर व अधिक उपज।

4.CICR Series (CICR 1, 2, 3):

- CICR 1: ये देशी कपास की सूखा सहनशील, लंबा रेशा वाली किस्म है।
- CICR 2: ये देशी कपास की संकर, अधिक उपज देने वाली किस्म है।
- CICR 3: ये किस्म भी रोग प्रतिरोधी, उच्च गुणवत्ता वाली है।

5 AAH-1 (हिसार):

- देसी कपास का पहला संकर, 20-22 क्विंटल/हेक्टेयर उपज, गुलाबी सुंडी प्रतिरोधी, 150-160 दिन में तैयार।
- उपयुक्त क्षेत्र: हरियाणा, पंजाब, राजस्थान।

सोयाबीन की उन्नत किस्में

सोयाबीन भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसलों में से एक है, जिसे देशभर में बड़े पैमाने पर उगाया जाता है। यह न केवल प्रोटीन का प्रमुख स्रोत है, बल्कि इससे तेल, सोया सॉस, दूध जैसे कई उत्पाद भी बनाए जाते हैं। इसकी खेती के लिए सही मौसम, अनुकूल जलवायु और उपयुक्त मिट्टी जरूरी होती है। आमतौर पर इसकी बुवाई जून में की जाती है और कटाई सितंबर से अक्टूबर के बीच होती है। अच्छी उपज पाने के लिए बीज का सही चुनाव, समय पर खाद और सिंचाई, रोग नियंत्रण और वैज्ञानिक तरीकों से रोपाई करना आवश्यक होता है। प्राकृतिक कीटनाशकों का प्रयोग करके फसल को सुरक्षित भी रखा जा सकता है। सरकार द्वारा दी जा रही तकनीकी मदद और योजनाओं से किसान अब उन्नत तकनीकों के माध्यम से सोयाबीन की खेती कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। उच्च उपज देने वाली किस्में इस दिशा में सबसे अहम भूमिका निभाती हैं।

सोयाबीन की प्रमुख उन्नत किस्में:

JS 20-34

इस किस्म को जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश ने विकसित किया है। यह कम समय में तैयार हो जाती है और मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान

जैसे क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।

JS 93-05

यह किस्म महाराष्ट्र, एमपी, राजस्थान, गुजरात और यूपी के बुंदेलखंड क्षेत्र में उगाई जाती है। इसे केवल 1-2 सिंचाई की जरूरत होती है और यह 90-95 दिनों में तैयार हो जाती है। इसमें रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होती है और उपज 25 से 32 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

JS 2172

इसे जबलपुर स्थित जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय द्वारा तैयार किया गया है। यह बदलते मौसम और पानी की कमी को सहने में सक्षम है।
इस किस्म की खास बात यह है कि यह कई प्रमुख बीमारियों जैसे चारकोल रॉट, फली झुलसा आदि से अच्छी तरह लड़ने में सक्षम है। औसत उपज 28 क्विंटल/हेक्टेयर है।

राजस्थान के लिए अनुशंसित किस्में:

बांसवाड़ा, कोटा, बूंदी, उदयपुर आदि जिलों के लिए – प्रताप सोया (RAUS 5), PK 472, JS 93-05, इंदिरा सोया 9, JS 335, अहिल्या सीरीज की किस्में, परभणी सोना, प्रतिष्ठा, शक्ति आदि उपयुक्त मानी गई हैं।

महाराष्ट्र के लिए अनुशंसित किस्में:

विदर्भ और मराठवाड़ा के लिए – अहिल्या 1, JS 335, JS 93-05, MACS 58, परभणी सोना, मोनेटा, प्रसाद, फुले कल्याणी आदि किस्में भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान द्वारा अनुशंसित हैं।

खेत की तैयारी:

सबसे पहले मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करें ताकि पुराने फसल अवशेष खत्म हो जाएं। इसके बाद प्रति हेक्टेयर 20-25 गाड़ी सड़ी हुई गोबर खाद मिलाएं और दो-तीन बार तिरछी जुताई करें। फिर पानी लगाकर पलेवा करें और मिट्टी सूखने पर अंतिम जुताई कर खेत समतल करें।

खाद की मात्रा:

यदि रासायनिक खाद प्रयोग करना हो तो प्रति हेक्टेयर 40 किलो पोटाश, 60 किलो फास्फोरस, 20 किलो गंधक और 20 किलो नाइट्रोजन डालें।

बुवाई का तरीका:

बीज की मात्रा आकार पर निर्भर करती है – छोटे बीज के लिए 70 किग्रा, मध्यम के लिए 80 किग्रा और बड़े बीज के लिए 100 किग्रा प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। बुवाई मशीन से करें और पंक्तियों की दूरी 30 सेमी व गहराई 2-3 सेमी रखें।

ज्वार की किस्में - अनाज और चारा दोनों के लिए ज्वार की टॉप किस्में

ज्वार एक ठंडी तासीर वाला अनाज है, जिसे लोग गर्मियों में खाना पसंद करते हैं। गेहूं की तुलना में इसमें अधिक पोषक तत्व होते हैं जैसे कैल्शियम, प्रोटीन, आयरन, पोटैशियम और विटामिन। इसकी बाजार में अच्छी मांग होने के कारण किसान ज्वार

की खेती को प्राथमिकता दे रहे हैं। ज्वार को हरे चारे के रूप में भी उगाया जाता है। यह एक कम समय (3–4 महीने) में तैयार होने वाली फसल है, जिससे किसान कम समय में अच्छा लाभ कमा सकते हैं। इस लेख में हम आपको ज्वार की उन्नत किस्मों से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

अच्छे उत्पादन के लिए उन्नत बीज जरूरी

ज्वार की अच्छी पैदावार के लिए उन्नत किस्मों का चयन करना जरूरी है। सही बीज से बेहतर उपज मिलती है और मुनाफा भी बढ़ता है।

अनाज व चारा दोनों के लिए ज्वार की टॉप किस्में

इनमें से चार किस्में अनाज उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं और तीन किस्में चारे के लिए सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं:

अनाज के लिए उपयुक्त किस्में

CSH 16 (सीएसएच 16)

यह एक द्विउद्देशीय हाइब्रिड किस्म है जो अनाज और चारा दोनों के लिए उपयुक्त मानी जाती है। यह किस्म लगभग 105–110 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें अनाज की अच्छी उपज (45–50 क्विंटल/हेक्टेयर) के साथ-साथ चारे की भारी मात्रा (200–220 क्विंटल/हेक्टेयर) मिलती है। पौधे की ऊंचाई अधिक (270–280 से.मी.) होने के कारण इसमें भरपूर सूखा चारा मिलता है। यह वर्ष 1996 में विकसित की गई थी और आज भी किसान इसे खूब पसंद करते हैं।

CSV 15 (सीएसवी 15)

यह किस्म भी अनाज और चारे दोनों के उत्पादन के लिए उपयोगी है। यह 95–105 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इससे 35–40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक अनाज और 105–110 क्विंटल चारा प्राप्त होता है। इसकी ऊंचाई 230–240 से.मी. होती है और यह वर्ष 1994 में विकसित की गई थी। यह जल्दी पकने वाली और अच्छी उपज देने वाली किस्म है।

Pratap Jowar-1430 (प्रताप ज्वार-1430)

यह किस्म विशेष रूप से सामान्य वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए तैयार की गई है। यह तना छेदक और शीर्ष मक्खी जैसे कीटों के प्रति सहनशील है। इसकी औसत अनाज उपज 30–35 क्विंटल/हेक्टेयर है, जबकि चारे की उपज 110–115 क्विंटल तक जाती है। यह वर्ष 2004 में विकसित की गई थी और कीट-प्रभावित क्षेत्रों में बेहद उपयोगी साबित होती है।

CSV 23 (सीएसवी 23)

यह किस्म पोषण से भरपूर अनाज के लिए प्रसिद्ध है। इसमें 7.15% प्रोटीन और 45.7% पाचनशील सूखे पदार्थ पाए जाते हैं। यह किस्म 110–115 दिनों में तैयार होती है और इससे 25–30 क्विंटल/हेक्टेयर अनाज तथा 160–170 क्विंटल/हेक्टेयर चारा प्राप्त किया जा सकता है। यह विशेष रूप से उन किसानों के लिए उपयुक्त है जो गुणवत्तापूर्ण अनाज और चारा दोनों चाहते हैं।

हरे चारे के लिए सर्वश्रेष्ठ किस्में

SSG 59-3 (एसएसजी 59-3)

यह किस्म हरे चारे के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय और उन्नत मानी जाती है। केवल 55–60 दिनों में इसकी पहली कटाई की जा सकती है और इसके बाद 2–3 बार तक पुनः कटाई संभव है। इससे 400–500 क्विंटल/हेक्टेयर तक हरे चारे की भारी पैदावार होती है। इसे वर्ष 1978 में विकसित किया गया था और यह पशुपालन करने वाले किसानों के लिए आदर्श विकल्प है।

MP Chari (एमपी चरी)

यह हरे चारे के लिए दूसरी प्रमुख किस्म है। इसकी पहली कटाई 55–60 दिनों में और दूसरी कटाई 35–40 दिनों बाद की जा सकती है। इससे औसतन 350–400 क्विंटल/हेक्टेयर चारा प्राप्त होता है।

लगे हटके
करे हटके

बोल्ड एंड ब्लैक

DIGITRAC
PP43i

37.3 kW श्रेणी
50 HP श्रेणी

यह किस्म बहु-कटाई योग्य है और विशेष रूप से पशु चारा उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

Rajasthan Chari 2 (राजस्थान चरी 2)

यह किस्म विशेष रूप से कम पानी वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इसकी पौधों की ऊंचाई 190–220 से.मी. होती है और इसे 70–72 दिनों में एक बार काटा जा सकता है (एकल कटाई)।

इससे 300–350 क्विंटल/हेक्टेयर तक चारे की पैदावार होती है। इसे वर्ष 1984 में विकसित किया गया था और यह शुष्क क्षेत्रों में चारा उत्पादन के लिए एक अच्छा विकल्प है।

अधिक उपज देने वाली मक्का की उन्नत किस्में

मक्का एक बहुपयोगी फसल है जिसका उपयोग अनाज, पशु चारे और औद्योगिक कच्चे माल के रूप में होता है। मक्का का आटा, मक्के की रोटी और अन्य खाद्य उत्पादों में इसका विशेष महत्व है। इसकी अच्छी पैदावार के लिए उपयुक्त जलवायु और उपजाऊ मिट्टी जरूरी होती है। मक्का गर्म और अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह उगता है। साथ ही, सही किस्म का चयन भी बेहतर उत्पादन और मुनाफे के लिए आवश्यक है। आइए जानते हैं कुछ प्रमुख उन्नत किस्मों के बारे में ।

मक्का की उन्नत किस्में

भारत में मक्का की कई किस्में मौजूद है इन किस्में के फीचर्स निम्नलिखित दिए गए है -

1. डी-941

यह किस्म खासतौर पर मध्य और पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा तथा पंजाब के लिए विकसित की गई है।

- उपज: प्रति हेक्टेयर 40-45 क्विंटल
- विशेषताएं: नारंगी-पीले रंग के दाने, संकुलित किस्म
- पकने का समय: 80-85 दिन
- सिंचाई स्थिति: सिंचित व असिंचित दोनों क्षेत्रों के लिए उपयुक्त

2. पी.आर.ओ. 312

यह लंबी अवधि की संकर किस्म आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान और गुजरात के लिए उपयुक्त है।

- उपज: 45-50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
- विशेषताएं: पीले नारंगी रंग के दाने, सिंचित क्षेत्र के लिए बेहतर
- पकने का समय: 100-110 दिन

3. वाओ 9639

यह किस्म पूरे भारत में आसानी से उगाई जा सकती है और अच्छी पैदावार देती है।

- उपज: 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
- विशेषताएं: मध्यम अवधि की किस्म, केवल सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त
- पकने का समय: 85-95 दिन

4. गंगा 5

मक्का की यह किस्म बेहद लोकप्रिय और उत्पादक है।

- उपज: 55-60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
- विशेषताएं: मजबूत पौधे, शंकु आकार के भुट्टे, पीले दाने

- पकने का समय: 90-95 दिन
- क्षेत्र: मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा
- सिंचाई: कम वर्षा (लगभग 30 इंच) वाले असिंचित क्षेत्रों के लिए भी उपयुक्त

5. जवाहर मक्का 216

यह किस्म रबी और खरीफ दोनों मौसमों के लिए उपयुक्त है।

- उपज: 50-55 क्विंटल प्रति हेक्टेयर
- विशेषताएं: पीले या नारंगी रंग के दाने, हेलियोथोस्पोरियम पत्ती धब्बा रोग के प्रति सहनशील
- पकने का समय: 90-95 दिन
- क्षेत्र: विशेष रूप से मध्य प्रदेश के लिए विकसित

तरबूज की खेती कैसे करें: होगी लाखों रुपए की कमाई

तरबूज की खेती की संपूर्ण जानकारी

तरबूज एक लोकप्रिय ग्रीष्मकालीन फल है, जिसकी उत्पत्ति दक्षिण अमेरिका में मानी जाती है। यह न केवल स्वादिष्ट होता है, बल्कि शरीर को ठंडक देने में भी अत्यंत लाभकारी है। इसमें लगभग 92% पानी होता है, जो गर्मियों में शरीर को हाइड्रेट रखने में मदद करता है। इसके अलावा इसमें प्रोटीन, खनिज तत्व और कार्बोहाइड्रेट भी पाए जाते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए उपयोगी हैं। दुनिया के कई देशों में तरबूज की खेती की जाती है, और जापान में तो इसे विशेष कांच के डिब्बों में उगाकर चौकोर आकार में तैयार किया जाता है, जो इसे और भी आकर्षक बनाता है।

भारत में तरबूज की खेती कहाँ होती है?

भारत में तरबूज की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। विशेष रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश इसके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। इन क्षेत्रों की जलवायु और मिट्टी तरबूज की खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं। गर्म और शुष्क जलवायु में इसकी पैदावार बेहतर होती है, जिससे किसानों को अच्छा लाभ प्राप्त होता है।

उपयुक्त मिट्टी और जल निकास

तरबूज की खेती के लिए उपजाऊ और अच्छे जल निकास वाली भूमि सबसे उपयुक्त होती है। लाल बलुई और मध्यम प्रकार की मिट्टी में इसकी पैदावार उत्कृष्ट होती है। जलभराव वाली भूमि में इसकी खेती नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे जड़ सड़ने की समस्या हो सकती है। मिट्टी का pH मान 6 से 7 के बीच होना चाहिए, जिससे पौधों की वृद्धि अच्छी होती है और फल की गुणवत्ता बेहतर रहती है।

फसल चक्र का महत्व

अच्छी पैदावार के लिए फसल चक्र अपनाना आवश्यक है। लगातार एक ही फसल उगाने से मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है और कीट व रोगों का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए तरबूज की खेती को अन्य फसलों के साथ बदल-बदल कर करना चाहिए। इससे मिट्टी की गुणवत्ता बनी रहती है और उत्पादन में वृद्धि होती है।

प्रमुख किस्में और उनकी विशेषताएं

तरबूज की कई उन्नत किस्में उपलब्ध हैं, जो अधिक

पैदावार और बेहतर गुणवत्ता प्रदान करती हैं। “Improved Shipper” किस्म बड़े आकार के फलों के लिए जानी जाती है और इसमें 8-9 प्रतिशत मिठास होती है। “Special No.1” जल्दी पकने वाली किस्म है, जबकि “Sugar Baby” गहरे लाल गूदे और 9-10 प्रतिशत मिठास के लिए प्रसिद्ध है। ये किस्में किसानों के लिए लाभदायक साबित होती हैं।

आईसीएआर द्वारा विकसित किस्में

आईसीएआर-आईआईएचआर बैंगलोर द्वारा विकसित किस्में जैसे “Arka Muthu”, “Arka Aiswarya” और “Arka Manik” आधुनिक खेती के लिए बेहद उपयुक्त हैं। Arka Muthu जल्दी पकने वाली किस्म है और 75-80 दिनों में तैयार हो जाती है। Arka Aiswarya में उच्च मिठास और अधिक उत्पादन होता है, जबकि Arka Manik अपने बड़े आकार और उच्च गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। ये किस्में वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा देती हैं।

अन्य लोकप्रिय और विदेशी किस्में

भारत में विदेशी किस्में भी लोकप्रिय हो रही हैं, जैसे China की Yellow Doll और Red Doll तथा USA की Regency, Royal Sweet और Ferrari। इसके अलावा Asahi Yamato किस्म भी काफी प्रसिद्ध है, जो 95 दिनों में तैयार होती है और इसके फल मध्यम आकार के होते हैं। Varun, Yuvaraj, Aayesha जैसी किस्में भी किसानों के बीच लोकप्रिय हैं।

जमीन की तैयारी

तरबूज की अच्छी खेती के लिए खेत की गहरी जुताई आवश्यक होती है। इसके बाद खेत को समतल करना चाहिए ताकि पानी का उचित निकास हो सके। मिट्टी को भुरभुरी बनाना जरूरी है, जिससे बीज आसानी से अंकुरित हो सकें। खेत की तैयारी में जैविक खाद का प्रयोग करने से उत्पादन और गुणवत्ता दोनों में सुधार होता है।

बुवाई का समय और दूरी

उत्तर भारत में तरबूज की बुवाई जनवरी से मार्च और नवंबर-दिसंबर में की जाती है। बुवाई के लिए उचित दूरी रखना बहुत जरूरी है। कतार से कतार की दूरी 2 से 3.5 मीटर और पौधे से पौधे की दूरी लगभग 60 सेंटीमीटर होनी चाहिए। इससे पौधों को पर्याप्त जगह मिलती है और वे अच्छी तरह विकसित होते हैं।

बुवाई की विधियां और बीज उपचार

तरबूज की बुवाई विभिन्न तरीकों से की जाती है, जैसे क्यारियों, गड्ढों और मेड़ों पर। प्रत्येक विधि में बीज की गहराई 2-3 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। बीज को बोने से पहले कार्बेन्डाजिम और ट्राइकोडर्मा से उपचारित करना चाहिए, जिससे रोगों से बचाव होता है और अंकुरण दर बढ़ती है।

खरपतवार नियंत्रण और सिंचाई

तरबूज की खेती में खरपतवार नियंत्रण बहुत महत्वपूर्ण है। शुरुआती अवस्था में खेत को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए, क्योंकि इससे 30 प्रतिशत तक पैदावार प्रभावित हो सकती है। सिंचाई के लिए गर्मियों में सप्ताह में एक बार पानी देना उचित होता है। ध्यान रखें कि खेत में पानी जमा न हो और फल पर सीधे पानी न पड़े, क्योंकि इससे गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

कटाई, भंडारण और सावधानियां

तरबूज की कटाई तब करनी चाहिए जब फल पूरी तरह पक जाए। पकने की पहचान तने के पास के सूखे रेशों और थपथपाने पर आने वाली आवाज से होती है। कटाई के बाद फलों को ठंडे और नमी वाले स्थान पर रखना चाहिए। इनसे सेब और केले के साथ नहीं रखना चाहिए, क्योंकि इससे उनकी गुणवत्ता खराब हो सकती है। सही भंडारण से तरबूज 14 दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

खरबूजे की खेती कैसे करें: कम समय में ज्यादा मुनाफा

खरबूजे की खेती की जानें पूरी जानकारी (kharbuja ki kheti)

गर्मियों के मौसम में जिन फलों की मांग सबसे ज्यादा रहती है, उनमें खरबूजा एक प्रमुख फल है। यह न सिर्फ स्वादिष्ट होता है बल्कि शरीर को ठंडक और हाइड्रेशन भी प्रदान करता है। यही कारण है कि बाजार में इसकी मांग हर साल लगातार बनी रहती है। भारत के कई राज्यों जैसे पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान में इसकी बड़े पैमाने पर खेती की जाती है। यदि किसान आधुनिक तकनीकों और सही प्रबंधन के साथ खरबूजे की खेती करें, तो यह उनके लिए अत्यधिक लाभदायक साबित हो सकती है। वर्तमान समय में कई लोग पारंपरिक नौकरियों से हटकर खेती की ओर रुख कर रहे हैं, और ऐसे में खरबूजा एक बेहतरीन नगदी फसल का विकल्प बनकर उभर रहा है।

खरबूजे की खेती क्यों है फायदेमंद?

खरबूजा एक कद्दूवर्गीय फसल है जो बेल के रूप में बढ़ती है और बहुत कम समय में तैयार हो जाती है। रबी फसलों की कटाई के बाद जब खेत खाली हो जाते हैं, तब जायद सीजन में इसकी खेती करके किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं। गर्मियों में इसकी मांग अधिक होने के कारण बाजार में अच्छे दाम मिलते हैं। एक हेक्टेयर में इसकी खेती से लगभग 200 से 250 क्विंटल तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है, जिससे किसान एक सीजन में लाखों रुपये तक कमा सकते हैं। इसके अलावा सरकार द्वारा बीज और कृषि यंत्रों पर दी जाने वाली सब्सिडी भी किसानों के लिए अतिरिक्त लाभ का अवसर प्रदान करती है।

खरबूजे का उपयोग और पोषण मूल्य

खरबूजा स्वादिष्ट और मीठा फल है, जिसे सीधे खाने के अलावा सलाद और जूस के रूप में भी उपयोग किया जाता है। इसमें लगभग 90 प्रतिशत पानी होता है, जो शरीर को गर्मी में ठंडक और ऊर्जा देता है। इसके साथ ही इसमें कार्बोहाइड्रेट, विटामिन और खनिज तत्व भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। इसके बीज भी अत्यंत पौष्टिक होते हैं, जिनमें प्रोटीन, फाइबर, वसा, कैल्शियम, आयरन, जिंक और मैग्नीशियम जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व मौजूद होते हैं। इनका उपयोग स्नैक्स और औषधीय रूप में भी किया जाता है, जिससे अतिरिक्त आय का स्रोत

WIDER PLATFORM WITH DOUBLE FOOTSTEP

Enhances operator comfort

बनता है।

प्रमुख उन्नत किस्में

खरबूजे की अच्छी पैदावार के लिए सही किस्म का चयन बेहद जरूरी है। कुछ प्रमुख किस्में इस प्रकार हैं:

- पूसा शरबती – गुलाबी रंग का छिलका और मीठा गूदा, एक बेल पर 4–5 फल।
- पंजाब सुनहरी – हल्के पीले रंग का फल, अधिक वजन और अच्छी उपज।
- पूसा मधुरस – गोल आकार, गहरे रंग का फल, 5–6 फल प्रति बेल।
- आईवीएमएम 3 – धारीदार और बहुत मीठा फल।
- हरा मधु – बड़े आकार और मोटे गूदे वाला, अत्यधिक स्वादिष्ट।

इन किस्मों का चयन क्षेत्र और जलवायु के अनुसार करना चाहिए ताकि अधिक उत्पादन मिल सके।

मिट्टी, जलवायु और समय

खरबूजे की खेती (kharbuza ki kheti) के लिए हल्की रेतीली और अच्छी जल निकास वाली मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। जायद सीजन यानी फरवरी से अप्रैल के बीच इसकी बुवाई करना सर्वोत्तम माना जाता है। बीजों के अंकुरण के लिए 25–30 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त होता है, जबकि पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए 30–45 डिग्री तापमान आदर्श रहता है।

खरबूजे के खेत की तैयारी कैसे करें?

खरबूजे की खेती से पहले खेत की अच्छी तरह जुताई करनी चाहिए। इसके बाद सिंचाई करके मिट्टी को नरम किया जाता है और कुछ दिनों बाद पाटा लगाकर खेत को समतल बनाया जाता है। फिर क्यारियां या नालियां तैयार करके उनमें जैविक और रासायनिक खाद मिलाई जाती है। अच्छी तैयारी से पौधों की वृद्धि बेहतर होती है और उत्पादन में वृद्धि होती है।

उर्वरक प्रबंधन

उच्च उत्पादन के लिए संतुलित उर्वरक का प्रयोग आवश्यक है। प्रति हेक्टेयर 200–250 क्विंटल सड़ी हुई गोबर की खाद डालनी चाहिए। इसके अलावा 60 किलोग्राम फास्फोरस, 40 किलोग्राम पोटाश और 30 किलोग्राम नाइट्रोजन का उपयोग करना चाहिए। पौधों में फूल आने के समय लगभग 20 किलोग्राम यूरिया देना फायदेमंद होता है, जिससे फल का विकास बेहतर होता है।

बुवाई की विधि और सिंचाई

खरबूजे की खेती बीज या पौध दोनों तरीकों से की जा सकती है। एक हेक्टेयर खेत के लिए लगभग 1 से 1.5 किलोग्राम बीज पर्याप्त होते हैं। बुवाई करते समय पौधों के बीच लगभग 2 फीट की दूरी रखनी चाहिए। बीजों को क्यारियों या नालियों में बोया जा सकता है। सिंचाई की बात करें तो शुरुआती अवस्था में सप्ताह में 1–2 बार पानी देना जरूरी होता है। गर्मी में नियमित सिंचाई करनी चाहिए, जबकि वर्षा ऋतु में आवश्यकता के अनुसार पानी देना पर्याप्त होता है।

फसल की कटाई (तुड़ाई)

खरबूजे की फसल बुवाई के लगभग 2.5 से 3 महीने बाद तैयार हो जाती है। जब फल लगभग 90 प्रतिशत पक जाएं, तब उन्हें तोड़ लेना चाहिए। समय पर तुड़ाई करने से फल की गुणवत्ता और बाजार मूल्य दोनों बेहतर रहते हैं।

लागत और मुनाफा

एक हेक्टेयर में खरबूजे की खेती का कुल खर्च बीज, खाद, मजदूरी और कीटनाशकों सहित लगभग 20–30 हजार रुपये तक आ सकता है। वहीं उत्पादन 200–250 क्विंटल तक होता है। यदि बाजार में कीमत 15–30 रुपये प्रति किलो मिले, तो किसान 2.5 से 4 लाख रुपये तक की आय प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा खरबूजे के बीज भी एक अतिरिक्त आय का स्रोत हैं। लगभग 6 क्विंटल बीज उत्पादन से किसान अच्छी कमाई कर सकते हैं, जिससे कुल

मुनाफा और बढ़ जाता है।
खरबूजे की खेती (Muskmelon Farming) कम समय में अधिक लाभ देने वाली एक बेहतरीन फसल है। यदि किसान सही तकनीक, उन्नत किस्मों और संतुलित उर्वरक प्रबंधन का पालन करें, तो वे इससे शानदार आय अर्जित कर सकते हैं। गर्मियों में इसकी बढ़ती मांग और सरकार की सहायता योजनाएं इसे और भी लाभदायक बनाती हैं। इसलिए जो किसान खाली पड़ी जमीन का सही उपयोग करना चाहते हैं, उनके लिए खरबूजे की खेती एक उत्कृष्ट विकल्प साबित हो सकती है।

भिंडी के रोग - रोगों के नाम, लक्षण और नियंत्रण के उपाय

भिंडी की खेती भारत में एक महत्वपूर्ण कृषि व्यवसाय है, जिसे विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर किया जाता है। मुख्य रूप से इसे खरीफ के मौसम में उगाया जाता है। इस फसल की अच्छी पैदावार के लिए उपजाऊ मिट्टी, उपयुक्त मौसम और अनुकूल प्राकृतिक परिस्थितियाँ आवश्यक होती हैं। भिंडी उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है। भिंडी की बुवाई आमतौर पर मार्च से जून के बीच होती है और फसल जुलाई से सितंबर तक पककर तैयार हो जाती है।

भिंडी की खेती में प्रमुख रोग और उनके नियंत्रण उपाय

1. डैम्पिंग ऑफ (Damping Off)

यह रोग बीज बोने के तुरंत बाद दिखाई देता है। ठंडा और नम मौसम, भारी मिट्टी, अधिक नमी और अत्यधिक भीड़ इस रोग को बढ़ावा देते हैं।
इस रोग में बीज अंकुरित नहीं होते या अंकुर निकलने के बाद मर जाते हैं। रोगग्रस्त तनों पर मिट्टी की सतह के पास घाव बनते हैं जिससे पौधे गिर जाते हैं।

नियंत्रण उपाय:

- अत्यधिक सिंचाई से बचें।
- बीजोपचार करें: ट्राइकोडर्मा विराइड (3-4 ग्राम/किलो बीज) या थीरम (2-3 ग्राम/किलो बीज) का उपयोग करें।
- मिट्टी को डाइथेन एम-45 (0.2%) या बाविस्टिन (0.1%) से उपचारित करें।
- नियमित निरीक्षण करें और प्रभावित पौधों को नष्ट करें।

2. येलो वेन मोज़ेक वायरस (Yellow Vein Mosaic Virus)

इस रोग में पत्तियों की नसें पीली और मोटी हो जाती हैं। गंभीर मामलों में पत्तियाँ पीली, छोटी हो जाती हैं और पौधा बौना रह जाता है। फल छोटे, विकृत और कम मूल्य के होते हैं।

नियंत्रण उपाय:

- 5% नीम बीज गिरी अर्क या अदरक-लहसुन-मिर्च अर्क का छिड़काव करें।
- खरपतवार और जंगली मेज़बानों को नष्ट करें।
- संक्रमित पौधों को हटाकर जला दें।
- गर्मी में रोपण से बचें।
- रोग-प्रतिरोधी किस्में लगाएँ जैसे परभणी क्रांति, अर्का अनामिका, वीआरओ-5, वीआरओ-6।

3. फ्यूज़ेरियम विल्ट (Fusarium Wilt)

यह रोग पौधों को मुरझा देता है, जो शुरुआत में अस्थायी होता है पर बाद में स्थायी हो जाता है। पत्तियाँ पीली होकर गिरने लगती हैं और अंततः पौधा सूख जाता है।

नियंत्रण उपाय:

- 10 दिन के अंतराल पर डाइमेथोएट (0.05%) या ऑक्सीडेमेटन मिथाइल (0.02%) का छिड़काव करें।
- खनिज तेल (2%) का भी उपयोग करें।
- बुवाई के समय कार्बोफ्यूरान 1 किलो/हेक्टेयर की दर से मिलाएँ।
- प्रतिरोधी किस्मों जैसे अर्का अनामिका व अर्का अभय का उपयोग करें।

4. पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew)

यह रोग विशेष रूप से पुरानी पत्तियों और तनों पर सफेद चूर्ण जैसे धब्बों के रूप में दिखता है। पत्तियों के झड़ने के कारण उपज में गिरावट आती है। आर्द्रता और भारी ओस इसके प्रसार को बढ़ावा देती हैं।

नियंत्रण उपाय:

- अकार्बनिक सल्फर (0.25%) या डिनोकैप (0.1%) का 15 दिनों के अंतराल पर 3-4 बार छिड़काव करें।

अमरूद की जापानी रेड डायमंड किस्म: खेती से होगी शानदार कमाई

आजकल देश के किसान पारंपरिक खेती की बजाय विशेष किस्मों की फलों की खेती कर बेहतर मुनाफा कमा रहे हैं। ऐसी ही एक बेहद लोकप्रिय किस्म है जापानी रेड डायमंड अमरूद, जिसकी बाजार में मांग तेजी से बढ़ रही है। इसकी खासियत इसका बेहतरीन स्वाद और मिठास है। इस किस्म के अमरूद की कीमत बाज़ार में 100 से 150 रुपये प्रति किलो तक होती है। देश के कई राज्यों में किसान इसकी सफल खेती करके अच्छा खासा लाभ कमा रहे हैं। आइए जानते हैं रेड डायमंड अमरूद की खेती से जुड़ी सारी जरूरी जानकारी।

उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

जलवायु

रेड डायमंड अमरूद की खेती लगभग हर प्रकार की जलवायु में की जा सकती है, लेकिन बेहतर उत्पादन के लिए 10°C से 42°C के बीच का तापमान सबसे उपयुक्त होता है। तापमान 10 डिग्री से नीचे जाने पर भी इसकी उपज पर ज्यादा असर नहीं पड़ता।

मिट्टी

मिट्टी की बात करें तो यह किस्म हर तरह की मिट्टी में उगाई जा सकती है, लेकिन काली या बलुई दोमट मिट्टी में इसके सबसे अच्छे परिणाम मिलते हैं। मिट्टी का पीएच 7 से 8 के बीच होना चाहिए, जिससे उपज में वृद्धि होती है।

पौधों की रोपाई

सबसे पहले पौधों को नर्सरी में तैयार किया जाता है, उसके बाद इन्हें मुख्य खेत में लगाया जाता है। रोपाई के समय पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखना आवश्यक है।

- पौधे से पौधे की दूरी: 6 फीट
- कतार से कतार की दूरी: 8 फीट

साल में दो बार पौधों की छंटाई करनी चाहिए ताकि उनकी बढ़वार बेहतर हो। जब फल चीकू के आकार के हो जाएं, तब उन्हें अखबार या फोम बैग से ढक देना चाहिए। इससे फल सही तरीके से पकते हैं और उन पर दाग-धब्बे नहीं आते।

खाद और सिंचाई प्रबंधन

रेड डायमंड अमरूद की खेती में पोषण प्रबंधन बेहद जरूरी है।

1. जैविक खाद: गोबर की खाद और वर्मी कम्पोस्ट
2. रासायनिक उर्वरक: एनपीके, सल्फर, मैग्नीशियम सल्फेट, कैल्शियम नाइट्रेट और बोरॉन

सिंचाई के लिए ड्रिप सिस्टम सबसे उपयुक्त माना जाता है, क्योंकि यह मिट्टी की नमी को बनाए रखता है और पौधों की जरूरत के अनुसार पानी पहुंचाता है।

रेड डायमंड अमरूद की खेती से कितनी कमाई होती है

रेड डायमंड अमरूद बाहर से आम अमरूद जैसा लगता है, लेकिन इसका स्वाद नाशपाती जैसा मीठा और गूदा तरबूज की तरह लाल होता है।

- बाजार मूल्य: ₹100–₹150 प्रति किलो
- देशी अमरूद की तुलना में कमाई: लगभग तीन गुना अधिक
- खर्च: कम लागत में अधिक मुनाफा

इस किस्म की खेती में लागत अपेक्षाकृत कम होती है, लेकिन बाजार में अच्छी कीमत मिलने के कारण किसान बड़ी कमाई कर सकते हैं।

यदि आप फल की खेती की ओर बढ़ना चाहते हैं तो जापानी रेड डायमंड अमरूद की खेती एक लाभकारी विकल्प हो सकता है। यह न केवल कम खर्चीली है, बल्कि बाजार में इसकी भारी मांग भी है, जिससे किसानों को बेहतर आमदनी मिलती है।

आधुनिक बागवानी: भारतीय किसानों के लिए स्मार्ट खेती टिप्स

भारत में बागवानी के शौकीनों के लिए उपयोगी सुझाव

बागवानी करना एक ऐसा अनुभव है जो उत्साह और चुनौती दोनों से भरा होता है। इसकी शुरुआत अक्सर एक खाली और साधारण जमीन से होती है, लेकिन धीरे-धीरे वही जगह फूलों, फलों के पेड़ों, सब्जियों की क्यारियों और सुंदर सजावटी पौधों से भरकर एक आकर्षक बगीचे में बदल जाती है। बगीचा न केवल घर की सुंदरता बढ़ाता है, बल्कि यह दिनभर की थकान के बाद सुकून देने का एक बेहतरीन माध्यम भी है। यदि आप बागवानी में नए

हैं, तो कुछ आसान कदमों का पालन करके आप अपने सपनों का बगीचा तैयार कर सकते हैं।

1. सही स्थान का चयन

बागवानी की शुरुआत हमेशा छोटे स्तर से करना समझदारी होती है। अपने बगीचे के लिए ऐसी जगह चुनें जहाँ कम से कम 5-6 घंटे की सीधी धूप मिलती हो। तेज हवाओं वाले स्थान से बचना चाहिए, क्योंकि इससे छोटे पौधे गिर सकते हैं और परागण की प्रक्रिया भी प्रभावित होती है। साथ ही, ऐसी जगह चुनें जहाँ पानी देना और देखभाल करना आसान हो, ताकि आप नियमित रूप से पौधों पर ध्यान दे सकें।

2. बगीचे का प्रकार तय करें

स्थान तय करने के बाद अगला कदम यह होता है कि आप किस तरह का बगीचा बनाना चाहते हैं। आप फूलों से भरा बगीचा, जड़ी-बूटियों का बगीचा, किचन गार्डन या सब्जियों का बगीचा बना सकते हैं। अपनी रुचि और जरूरत के अनुसार धीरे-धीरे योजना बनाकर अपने बगीचे को आकार दें।

3. मिट्टी की तैयारी

अच्छे पौधों के लिए उपजाऊ मिट्टी बहुत जरूरी होती है। मिट्टी को भुरभुरी और नरम होना चाहिए ताकि जड़ें आसानी से फैल सकें। अगर मिट्टी बहुत सख्त या पथरीली है, तो उसे जोतकर और पत्थर हटाकर सुधार करें। साथ ही, जैविक खाद जैसे पत्तियाँ और सब्जियों के छिलके मिलाकर मिट्टी की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है।

4. जरूरी बागवानी उपकरण

बागवानी शुरू करने के लिए कुछ बुनियादी उपकरणों की आवश्यकता होती है। इसमें छंटाई के लिए कैंची, मिट्टी खोदने के लिए फावड़ा और खुरपी, और पानी देने के लिए पाइप या कैन शामिल हैं। खरपतवार हटाने के लिए कांटा और बागवानी चाकू भी उपयोगी होते हैं। ये उपकरण आपके काम को आसान और प्रभावी बनाते हैं।

5. सही पौधों का चयन

बगीचे का सबसे रोचक हिस्सा पौधों का चयन करना होता है। पौधे चुनते समय उनकी धूप, पानी और मौसम की जरूरतों को समझना जरूरी है। अपने क्षेत्र के अनुसार पौधों का चयन करना अधिक लाभदायक होता है। आप आसपास के बगीचों को देखकर भी प्रेरणा ले सकते हैं।

6. पहले से योजना बनाएं

बुवाई शुरू करने से पहले पूरी योजना बनाना जरूरी है। हर पौधे के लिए उचित स्थान तय करें ताकि उन्हें पर्याप्त जगह मिल सके। पौधों पर लेबल लगाकर उनकी पहचान बनाए रखें और बगीचे की प्रगति को नोट करने के लिए एक रिकॉर्ड भी तैयार करें। इससे आपको पौधों की वृद्धि को समझने में मदद मिलेगी।

7. क्यारियों का निर्माण

क्यारियों में बागवानी करना अधिक सुविधाजनक होता है। क्यारियों की चौड़ाई 3-4 फीट और लंबाई 8-10 फीट रखना उपयुक्त होता है। इससे आप बिना पौधों को नुकसान पहुंचाए आसानी से देखभाल कर सकते हैं। पौधों को पर्याप्त दूरी पर लगाएं ताकि उनकी वृद्धि प्रभावित न हो।

8. सही तरीके से रोपाई

पौधों को लगाने के लिए सही गहराई और दूरी का ध्यान रखना आवश्यक है। बीज को उसकी आकार के अनुसार उचित गहराई में बोएं और मिट्टी से ढककर हल्का पानी दें। पौधों की रोपाई करते समय जड़ों को पूरी तरह मिट्टी में ढकना चाहिए और बाद में हल्का पानी देना चाहिए।

9. संतुलित सिंचाई

पौधों को सही मात्रा में पानी देना बहुत जरूरी है। अधिक पानी देने से जड़ें खराब हो सकती हैं। मिट्टी को 3-4 इंच तक नम रखना पर्याप्त होता है। छोटे पौधों को रोज पानी देना चाहिए, जबकि बड़े पौधों को मौसम के अनुसार 2-3 दिन में पानी देना उचित होता है।

10. जैविक खाद का उपयोग

पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए जैविक खाद बहुत उपयोगी होती है। कम्पोस्ट बनाकर आप मिट्टी में पोषक तत्व बढ़ा सकते हैं। इसमें पत्तियाँ, घास और फलों के छिलके शामिल किए जा सकते हैं। इससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और पौधे स्वस्थ रहते हैं।

11. कीट और रोग नियंत्रण

कमजोर पौधे कीट और रोगों का शिकार जल्दी होते हैं। स्वस्थ पौधों में इन समस्याओं की संभावना कम होती है। घरेलू उपाय जैसे नीम का तेल और साबुन का घोल बनाकर पौधों पर छिड़काव करने से कीटों को नियंत्रित किया जा सकता है।

12. मल्च का उपयोग

मल्च मिट्टी को नमी बनाए रखने, तापमान संतुलित रखने और खरपतवार रोकने में मदद करता है। यह मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ाता है और पौधों को बेहतर पोषण प्रदान करता है।

13. शुरुआती सब्जियां उगाना

शुरुआत में आसान सब्जियां जैसे टमाटर, मूली, शिमला मिर्च और हरी पत्तेदार सब्जियां उगाना बेहतर होता है। धीरे-धीरे अनुभव बढ़ने पर आप कठिन फसलों की ओर बढ़ सकते हैं।

14. कंटेनर गार्डनिंग

अगर जगह कम है तो गमलों में भी बागवानी की जा सकती है। लगभग सभी प्रकार के पौधे गमलों में उगाए जा सकते हैं। बस ध्यान रखें कि गमलों में जल निकासीके लिए छेद होना जरूरी है और समय-समय पर पानी देना आवश्यक है।

15. खिड़की पर बागवानी

छोटी जगहों में भी खिड़की के पास पौधे उगाए जा सकते हैं। इससे घर सुंदर दिखता है और ताजी सब्जियां भी मिलती हैं। यह छोटे और बड़े दोनों प्रकार के घरों के लिए उपयोगी तरीका है।

16. सह-रोपण तकनीक

कुछ पौधे साथ में उगाने पर बेहतर परिणाम देते हैं। जैसे टमाटर के साथ तुलसी उगाने से उत्पादन बढ़ता है और कीट भी कम होते हैं। वहीं कुछ पौधों को साथ लगाने से बचना चाहिए क्योंकि वे एक-दूसरे की वृद्धि को प्रभावित करते हैं।

17. छंटाई का महत्व

नियमित छंटाई से पौधे स्वस्थ रहते हैं और नई वृद्धि होती है। अलग-अलग पौधों के लिए छंटाई का समय अलग होता है, इसलिए पौधे के अनुसार सही समय पर छंटाई करनी चाहिए।

18. नियमित देखभाल

बगीचे की नियमित देखभाल करना बहुत जरूरी है। सूखे फूल हटाना, खरपतवार निकालना और पौधों को समय पर पानी व पोषण देना उनकी अच्छी वृद्धि के लिए आवश्यक है।

अंत में, बागवानी उतनी कठिन नहीं है जितनी यह शुरुआत में लगती है। सही योजना, उचित पौधों का चयन और मिट्टी की देखभाल से आप एक सुंदर और फलदायी बगीचा तैयार कर सकते हैं।

सोनालिका ट्रैक्टर्स ने रचा इतिहास FY26 में 1,80,504 ट्रैक्टरों की रिकॉर्ड बिक्री 30वें वर्ष में ऐतिहासिक उपलब्धि

इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स ने अपने 30वें स्थापना वर्ष में एक नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए 1,80,504 ट्रैक्टरों की अब तक की सबसे अधिक वार्षिक बिक्री दर्ज की है। यह उपलब्धि केवल एक आंकड़ा नहीं है, बल्कि कंपनी की निरंतर मेहनत, मजबूत रणनीति और ग्राहकों के विश्वास का परिणाम है। 'जीतने का दम' की भावना के साथ कंपनी ने यह साबित कर दिया है कि सही दिशा और दृढ़ संकल्प के साथ हर लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

टीम और पार्टनर्स की निरंतरता बनी सफलता की कुंजी

इस शानदार सफलता की सबसे खास बात यह है कि कंपनी ने अपनी इस विकास यात्रा को लगभग उसी टीम और पार्टनर्स के साथ तय किया है। 50,000 ट्रैक्टरों की बिक्री से शुरू होकर 1 लाख, फिर 1.5 लाख और अब 1.8 लाख ट्रैक्टरों तक पहुंचना एक लंबी और प्रेरणादायक यात्रा है। इस दौरान कंपनी ने केवल अपने आंकड़ों में ही वृद्धि नहीं की, बल्कि अपने लोगों के साथ मिलकर मजबूत रिश्ते और भरोसा भी बनाया है।

ज़िद्द और अनुशासित कार्यशैली ने दिलाई नई ऊंचाई

कंपनी की सफलता के पीछे एक मजबूत मानसिकता और कार्य संस्कृति का बड़ा योगदान है। इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स की टीमों ने हर चुनौती को स्वीकार करते हुए 'Zidd' के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लिया है। अनुशासित कार्यप्रणाली, बेहतर निष्पादन (execution) और लगातार आगे बढ़ने की सोच ने हर महत्वाकांक्षा को वास्तविक उपलब्धि में बदलने का काम किया है। यही वजह है कि कंपनी लगातार प्रतिस्पर्धा में आगे बनी हुई है।

किसानों और डीलर नेटवर्क का अहम योगदान

इस उपलब्धि में कंपनी के डीलर नेटवर्क, विभिन्न विभागों की टीमों और सबसे महत्वपूर्ण—देश के

mahindra Rise

महिंद्रा ट्रैक्टर्स

टफ़ हरदम

महिंद्रा YUVRAJ 215 NXT NT

स्मार्ट। स्ट्रॉन्ग। इंटरकल्चर खेती के लिए उपयुक्त

सही उपयोग:

- कल्टिव्हेशन
- रोटावेटिंग
- स्प्रेईंग

किसानों का बड़ा योगदान रहा है। किसानों का भरोसा और सहयोग ही कंपनी की सबसे बड़ी ताकत है, जो हर कदम पर उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। कंपनी ने इस सफलता के लिए सभी सहयोगियों का दिल से आभार व्यक्त किया है।

मजबूत साथ से आसान होती हर मंजिल

“जब साथ ही इतना मजबूत हो, तो हर मंजिल पास लगती है” — इस सोच के साथ कंपनी ने अपने सफर को आगे बढ़ाया है। टीमवर्क और साझेदारी की ताकत ने हर मुश्किल को आसान बनाया है और हर लक्ष्य को संभव बनाया है।

आगे बढ़ने का संकल्प: ‘अब रूकना नहीं है’

इस ऐतिहासिक उपलब्धि के बाद भी कंपनी का लक्ष्य यहीं रुकना नहीं है। ‘अब रूकना नहीं है’ के संदेश के साथ इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स आने वाले वर्षों में और भी बड़े लक्ष्य हासिल करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है। यह सफलता भविष्य में और बड़े कीर्तिमानों की नींव साबित होगी।

वीएसटी 932 DI 4WD: 32 एचपी श्रेणी में दमदार कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर

वीएसटी 932 DI 4WD ट्रैक्टर की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

वीएसटी 932 DI 4WD एक कॉम्पैक्ट और शक्तिशाली 32 HP श्रेणी का 4WD ट्रैक्टर है, जिसे खासतौर पर बागवानी, इंटरकल्चर, छोटे खेतों और मल्टीपर्पज कार्यों के लिए डिजाइन किया गया है। इसका मजबूत इंजन, बेहतर टॉर्क और 4WD ड्राइव इसे कठिन और संकरी परिस्थितियों में भी बेहतरीन प्रदर्शन देने में सक्षम बनाते हैं। यह ट्रैक्टर उन किसानों के लिए उपयुक्त है जो कम जगह में अधिक काम करना चाहते हैं।

वीएसटी 932 DI 4WD इंजन

वीएसटी 932 DI में 3 सिलेंडर का 1642 CC इंजन दिया गया है, जो 32 HP की पावर उत्पन्न करता है। इसका इंजन 2500 RPM पर कार्य करता है, जिससे यह तेज और स्मूद परफॉर्मेंस प्रदान करता है। इसका टॉर्क 109 Nm है, जो इसे भारी कार्यों में बेहतर

खींचने की क्षमता देता है। इसमें ड्राई टाइप एयर फिल्टर दिया गया है, जो धूल भरे वातावरण में इंजन की सुरक्षा करता है। साथ ही वाटर-कूल्ड कूलिंग सिस्टम इंजन को लंबे समय तक ठंडा रखता है। इस ट्रैक्टर का पीटीओ पावर 24 HP है, जिससे यह रोटावेटर, स्प्रेयर और अन्य कृषि उपकरणों को आसानी से चला सकता है।

वीएसटी 932 DI 4WD ट्रांसमिशन

इस ट्रैक्टर में सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन दिया गया है, जिससे गियर शिफ्टिंग स्मूद और आसान हो जाती है। इसमें Double Clutch सिस्टम दिया गया है, जो बेहतर नियंत्रण और कार्यक्षमता प्रदान करता है। वीएसटी 932 DI 4WD में 9 Forward + 3 Reverse गियर बॉक्स दिया गया है, जिससे किसान अलग-अलग कार्यों के लिए उपयुक्त स्पीड चुन सकते हैं। इसकी Forward Speed 2.08 से 22.3 kmph (या 25.65 kmph तक) और Reverse Speed 2.21 से 13.86 kmph है, जो इसे बहुउद्देश्यीय उपयोग के लिए सक्षम बनाती है।

वीएसटी 932 DI 4WD ब्रेक और स्टीयरिंग

इस ट्रैक्टर में Oil Immersed Disc Brakes दिए गए हैं, जो बेहतर सुरक्षा और लंबी उम्र प्रदान करते हैं। ये ब्रेक गर्म होने पर भी प्रभावी रहते हैं और कम मेंटेनेंस की जरूरत होती है। वीएसटी 932 DI 4WD में पावर स्टीयरिंग दिया गया है, जिससे ट्रैक्टर को चलाना आसान और आरामदायक हो जाता है, खासकर लंबे समय तक काम करने के दौरान।

वीएसटी 932 DI 4WD PTO

यह ट्रैक्टर MID PTO के साथ आता है, जो इसे खासतौर पर स्प्रेयर, घास काटने वाली मशीन और अन्य मिड-माउंट उपकरणों के लिए उपयुक्त बनाता है। इसका PTO RPM 540 है, जिससे विभिन्न उपकरणों को प्रभावी ढंग से चलाया जा सकता है।

वीएसटी 932 DI 4WD फ्यूल टैंक

वीएसटी 932 DI 4WD में 25 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है, जो छोटे और मध्यम कार्यों के लिए पर्याप्त है। यह ट्रैक्टर कम ईंधन खपत के साथ बेहतर माइलेज देता है।

वीएसटी 932 DI 4WD आयाम और वजन

इस ट्रैक्टर का कुल वजन 1240 किलोग्राम है, जो इसे स्थिर और संतुलित बनाता है। इसका Wheelbase 1520 mm है, जिससे बेहतर नियंत्रण मिलता है। इसकी Overall Length 2510 mm और Width 1070–1190 mm हैं, जो इसे कॉम्पैक्ट बनाती हैं। Ground Clearance 325 mm होने के कारण यह असमान खेतों में भी आसानी से काम कर सकता है। इसका Turning Radius 2100 mm है, जिससे यह संकरी जगहों में आसानी से घूम सकता है।

वीएसटी 932 DI 4WD हाइड्रोलिक्स

वीएसटी 932 DI 4WD की लिफ्टिंग क्षमता 1250 किलोग्राम है, जो इसे छोटे और मध्यम उपकरणों के लिए उपयुक्त बनाती है। इसमें CAT-1N 3-Point Linkage दिया गया है, जिससे विभिन्न कृषि उपकरण आसानी से जोड़े जा सकते हैं।

वीएसटी 932 DI 4WD टायर साइज और ड्राइव

यह ट्रैक्टर 4WD (Four Wheel Drive) सिस्टम के साथ आता है, जिससे बेहतर ट्रैक्शन और पकड़ मिलती है। इसके फ्रंट टायर 6.00 x 12 और रियर टायर 9.50 x 20 दिए गए हैं, जो खेत में स्थिरता और संतुलन प्रदान करते हैं। वीएसटी 932 DI 4WD एक कॉम्पैक्ट, पावरफुल और आधुनिक फीचर्स से लैस ट्रैक्टर है, जो खासतौर पर बागवानी, ग्रीनहाउस और छोटे खेतों के लिए एक बेहतरीन

विकल्प है। इसका दमदार इंजन, उच्च टॉर्क, 4WD सिस्टम और आसान संचालन इसे उन किसानों के लिए आदर्श बनाते हैं जो कम जगह में अधिक उत्पादकता चाहते हैं।

वीएसटी 932 DI 4WD कीमत?

VST 932 DI 4WD की भारत में कीमत लगभग ₹6.31 लाख से ₹6.56 लाख (एक्स-शोरूम) के बीच है, जो इसे 30–32 HP श्रेणी के कॉम्पैक्ट 4WD ट्रैक्टरों में एक किफायती और वैल्यू-फॉर-मनी विकल्प बनाती है।यह कीमत अलग-अलग राज्यों, आरटीओ चार्ज, बीमा और अन्य एक्स्ट्रा फीचर्स के अनुसार थोड़ी बदल सकती है। ऑन-रोड कीमत आमतौर पर एक्स-शोरूम कीमत से थोड़ी ज्यादा होती है, इसलिए सटीक कीमत जानने के लिए नजदीकी डीलर से संपर्क करना बेहतर रहता है। इस प्राइस रेंज को इस तरह डिजाइन किया गया है कि यह छोटे और मध्यम किसानों के बजट में आसानी से फिट हो सके। खासकर बागवानी, ग्रीनहाउस और मल्टी-क्रॉप खेती करने वाले किसानों के लिए यह ट्रैक्टर एक अच्छा निवेश साबित होता है, क्योंकि इसमें कम कीमत में 4WD सिस्टम, अच्छा टॉर्क और मजबूत हाइड्रोलिक क्षमता मिलती है।

स्वराज 735 एक्स एम: 40 एचपी श्रेणी में पावरफुल इंजन वाला ट्रैक्टर

स्वराज 735 एक्स एम ट्रैक्टर: कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

स्वराज 735 एक्स एम एक भरोसेमंद और दमदार ट्रैक्टर है, जो भारतीय किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इसमें 3 सिलेंडर वाला इंजन दिया गया है, जो 40 एचपी की श्रेणी में आता है। इसकी इंजन क्षमता 2734 सीसी है, जो इसे खेतों में भारी कार्यों के लिए उपयुक्त बनाती है। यह ट्रैक्टर 1800 आरपीएम पर काम करता है, जिससे ईंधन की बचत के साथ अच्छा प्रदर्शन मिलता है। इसका इंजन लंबे समय तक लगातार काम करने में सक्षम है, जिससे किसान बिना रुकावट के अपने कार्य पूरे कर सकते हैं।

पीटीओ एचपी और कार्य क्षमता

स्वराज 735 एक्स एम ट्रैक्टर का पीटीओ एचपी 29.8 है, जो इसे विभिन्न कृषि उपकरणों को आसानी से चलाने में सक्षम बनाता है। चाहे रोटावेटर

हो, थ्रेशर हो या स्प्रेयर, यह ट्रैक्टर हर प्रकार के उपकरण के साथ बेहतर तालमेल बनाता है। पीटीओ की ताकत के कारण यह ट्रैक्टर मल्टीपर्पज उपयोग के लिए उपयुक्त है। इससे किसान एक ही मशीन से कई प्रकार के काम कर सकते हैं, जिससे समय और लागत दोनों की बचत होती है।

गियर बॉक्स और ट्रांसमिशन

स्वराज 735 एक्स एम में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर का गियर बॉक्स दिया गया है। यह गियर संयोजन ट्रैक्टर को विभिन्न गति और परिस्थितियों में बेहतर नियंत्रण प्रदान करता है। खेतों में धीमी गति से काम करने से लेकर सड़क पर तेज गति से चलाने तक, यह ट्रैक्टर हर स्थिति में संतुलित प्रदर्शन देता है। गियर शिफ्टिंग भी स्मूथ है, जिससे चालक को कम थकान होती है।

ब्रेक और सुरक्षा

इस ट्रैक्टर में ड्राई डिस्क ब्रेक दिए गए हैं, जो मजबूत पकड़ और बेहतर नियंत्रण प्रदान करते हैं। ब्रेकिंग सिस्टम इतना प्रभावी है कि भारी लोड के साथ भी ट्रैक्टर को सुरक्षित रूप से रोका जा सकता है। खेतों और ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर काम करते समय यह सुविधा बेहद जरूरी होती है। इससे दुर्घटनाओं की संभावना कम हो जाती है और चालक को अधिक आत्मविश्वास मिलता है।

क्लच और संचालन सुविधा

स्वराज 735 एक्स एम में सिंगल क्लच ड्राई फ्रिक्शन प्लेट दी गई है, जो ट्रैक्टर के संचालन को सरल बनाती है। यह क्लच सिस्टम ट्रैक्टर को स्मूथ तरीके से चलाने में मदद करता है और गियर बदलते समय झटके कम करता है। इसका डिजाइन ऐसा है कि लंबे समय तक उपयोग के बाद भी इसकी कार्यक्षमता बनी रहती है। इससे मेंटेनेंस लागत भी कम रहती है।

स्टीयरिंग और नियंत्रण

इस ट्रैक्टर में मैकेनिकल स्टीयरिंग के साथ पावर

वजन उठाने की क्षमता और व्हील ड्राइव

स्वराज 735 एक्स एम की वजन उठाने की क्षमता 1000 किलोग्राम है, जो इसे भारी कृषि उपकरणों को उठाने और चलाने के लिए उपयुक्त बनाती है। यह ट्रैक्टर 2 व्हील ड्राइव (2WD) सिस्टम के साथ आता है, जो सामान्य कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त है। इसकी मजबूत बनावट और संतुलित डिजाइन के कारण यह ट्रैक्टर खेतों में स्थिरता बनाए रखता है और फिसलन कम होती है।

वारंटी और कीमत

इस ट्रैक्टर के साथ कंपनी 2000 घंटे या 2 साल की वारंटी प्रदान करती है, जो इसकी गुणवत्ता और भरोसे को दर्शाता है। भारत में स्वराज 735 एक्स एम की एक्स-शोरूम कीमत लगभग 5.93 लाख से 6.33 लाख रुपये के बीच है। यह कीमत इसके फीचर्स और प्रदर्शन को देखते हुए काफी प्रतिस्पर्धी मानी जाती है। मध्यम वर्ग के किसानों के लिए यह एक किफायती और टिकाऊ विकल्प साबित होता है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस: 42 एचपी श्रेणी में शानदार ट्रैक्टर

मैसी फर्ग्यूसन दुनिया के सबसे प्रसिद्ध ट्रैक्टर ब्रांड्स में से एक है, जो अपनी मजबूती, विश्वसनीयता और उन्नत तकनीक के लिए जाना जाता है। मैसी फर्ग्यूसन भारत में लंबे समय से किसानों के बीच भरोसे का नाम बना हुआ है। भारतीय बाजार में इसके ट्रैक्टर अपनी दमदार परफॉर्मेंस, कम मेंटेनेंस और बेहतर माइलेज के कारण काफी लोकप्रिय हैं। मैसी फर्ग्यूसन के ट्रैक्टर खासतौर पर मध्यम और बड़े किसानों के लिए डिजाइन किए जाते हैं, जो खेती के हर प्रकार के कार्यों को आसानी से संभाल सकते हैं।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस ट्रैक्टर की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस 42 HP श्रेणी का एक मजबूत और भरोसेमंद ट्रैक्टर है, जो खेती के विभिन्न कार्यों जैसे जुताई, बुवाई, ढुलाई और अन्य भारी कार्यों के लिए उपयुक्त है। इस ट्रैक्टर में प्लेनेटरी गियर सिस्टम दिया गया है, जो इसे ज्यादा टिकाऊ और भारी कार्यों के लिए सक्षम बनाता है। इसकी मजबूत बॉडी, उच्च लिफ्टिंग क्षमता और उन्नत फीचर्स इसे किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प बनाते हैं।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस इंजन

इस ट्रैक्टर में 3 सिलेंडर वाला 2500 CC क्षमता का इंजन दिया गया है, जो 42 HP की ताकत प्रदान करता है। यह इंजन 35.7 HP PTO पावर देता है, जिससे यह रोटावेटर, कल्टीवेटर और थ्रेशर जैसे उपकरणों को आसानी से चला सकता है। इसमें ड्राई एयर क्लीनर दिया गया है, जो इंजन को धूल से बचाता है और उसकी कार्यक्षमता बढ़ाता है। इसका वाटर कूल्ड सिस्टम इंजन को लंबे समय तक ठंडा रखता है, जिससे लगातार काम करने में कोई परेशानी नहीं होती।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस ट्रांसमिशन

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस में ड्यूल क्लच और पार्टियल कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन दिया गया है, जो गियर शिफ्टिंग को स्मूथ और आसान बनाता है। इसमें 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जबकि 10 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स का विकल्प भी उपलब्ध है। इसकी अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड लगभग 29.5 किमी/घंटा है, जिससे खेत और सड़क दोनों पर बेहतर प्रदर्शन मिलता है। इसमें 12V 75Ah बैटरी और 12V 36A अल्टरनेटर दिया गया है, जो ट्रैक्टर के इलेक्ट्रिकल सिस्टम को मजबूत बनाता है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस ब्रेक और स्टीयरिंग

इस ट्रैक्टर में मल्टी डिस्क ऑयल इमर्स्ड ब्रेक दिए गए हैं, जो बेहतर ब्रेकिंग और लंबी उम्र प्रदान करते हैं। ये ब्रेक कम मेंटेनेंस में अधिक सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। स्टीयरिंग की बात करें तो इसमें मैकेनिकल और पावर स्टीयरिंग दोनों विकल्प उपलब्ध हैं, जिससे किसान अपनी जरूरत के अनुसार चयन कर सकते

हैं। पावर स्टीयरिंग विकल्प ट्रैक्टर को चलाना और भी आसान बना देता है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस पावर टेक-ऑफ

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस में लाइव 6 स्प्लाइन PTO दिया गया है, जो 540 RPM @ 1500 ERPM पर काम करता है। यह फीचर विभिन्न कृषि उपकरणों को चलाने के लिए स्थिर और पर्याप्त शक्ति प्रदान करता है, जिससे खेती के कार्य तेजी और आसानी से पूरे होते हैं।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस फ्यूल टैंक

इस ट्रैक्टर में 47 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है, जिससे किसान लंबे समय तक बिना रुकावट के काम कर सकते हैं। यह सुविधा बड़े खेतों और लंबे समय तक काम करने के लिए काफी उपयोगी है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस डायमेंशन और वजन

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस का वजन 1900 किलोग्राम है, जो इसे बेहतर स्थिरता और संतुलन प्रदान करता है। इसका व्हीलबेस 1785 से 1935 मिमी के बीच है, जबकि कुल लंबाई 3338 मिमी और चौड़ाई 1660 मिमी है। इसके अलावा 340 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस दिया गया है, जिससे यह ऊबड़-खाबड़ खेतों में भी आसानी से काम कर सकता है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता

इस ट्रैक्टर की लिफ्टिंग क्षमता 1700 किलोग्राम है, जो इसे भारी कृषि उपकरण उठाने में सक्षम बनाती है। इसमें ड्राफ्ट, पोजीशन और रिस्पॉन्स कंट्रोल लिंक दिए गए हैं, जिससे उपकरणों की गहराई और संतुलन को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। यह फीचर खेती के कार्य को अधिक सटीक और प्रभावी बनाता है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस टायर साइज

इस ट्रैक्टर में आगे के टायर 6.00 × 16 और पीछे के टायर 13.6 × 28 साइज के दिए गए हैं। ये टायर बेहतर ग्रिप और संतुलन प्रदान करते हैं, जिससे ट्रैक्टर हर प्रकार की जमीन पर अच्छा प्रदर्शन करता है।

मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस की कीमत?

भारत में Massey Ferguson 241 DI Planetary Plus ट्रैक्टर की कीमत लगभग ₹6.86 लाख से ₹7.14 लाख (एक्स-शोरूम) के बीच है। इसकी कीमत राज्य और फीचर्स के अनुसार थोड़ी अलग हो सकती है। मैसी फर्ग्यूसन 241 डीआई प्लेनेटरी प्लस एक मजबूत, टिकाऊ और बहुउपयोगी ट्रैक्टर है, जो मध्यम और बड़े किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प साबित होता है। इसकी दमदार इंजन क्षमता, उच्च लिफ्टिंग पावर, उन्नत ट्रांसमिशन और आरामदायक संचालन इसे खेती के सभी कार्यों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। यदि आप एक ऐसा ट्रैक्टर चाहते हैं जो लंबे समय तक भरोसेमंद प्रदर्शन दे और कम मेंटेनेंस में अच्छा काम करे, तो यह मॉडल आपके लिए एक सही निवेश साबित हो सकता है।

पॉवर ट्रैक यूरो 439: 42 एचपी श्रेणी में पावरफुल ट्रैक्टर

पॉवर ट्रैक यूरो 439 ट्रैक्टर की जानें कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर्स

पॉवरट्रैक ब्रांड एस्कॉर्ट्स कुबोटा लिमिटेड के अंतर्गत आता है, जो भारत की एक प्रमुख कृषि मशीनरी निर्माता कंपनी है। एस्कॉर्ट्स कुबोटा अपने मजबूत और किफायती ट्रैक्टरों के लिए जानी जाती है। पॉवरट्रैक सीरीज़ खास तौर पर भारतीय किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जिसमें बेहतर माइलेज, कम मेंटेनेंस और टिकाऊपन पर खास ध्यान दिया जाता है। यही वजह है कि पॉवरट्रैक ट्रैक्टर ग्रामीण क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय हैं।

पॉवर ट्रैक यूरो 439 इंजन

पॉवरट्रैक यूरो 439 में 3 सिलेंडर वाला दमदार इंजन दिया गया है, जिसकी क्षमता 2339 CC है। यह इंजन 42 HP की पावर जनरेट करता है और 2200 RPM पर कार्य करता है, जिससे ट्रैक्टर को स्मूद और प्रभावी प्रदर्शन मिलता है। इसमें बड़ा आयल बाथ एयर फिल्टर दिया गया है, जो धूल भरे वातावरण में इंजन की सुरक्षा करता है और उसकी उम्र बढ़ाता है। साथ ही Water Cooled कूलिंग सिस्टम इंजन को लंबे समय तक ठंडा रखता है, जिससे लगातार काम करने में कोई परेशानी नहीं होती।

पॉवर ट्रैक यूरो 439 ट्रांसमिशन

इस ट्रैक्टर में Center Shift और Side Shift दोनों प्रकार के ट्रांसमिशन विकल्प मिलते हैं, जिससे ड्राइवर अपनी सुविधा के अनुसार चुन सकता है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जो विभिन्न कार्यों के लिए सही स्पीड प्रदान करते हैं। Single और Dual Clutch का विकल्प भी उपलब्ध है, जिससे ट्रैक्टर की कार्यक्षमता और बढ़ जाती है। इसका Inboard Reduction रियर एक्सेल भारी लोड के दौरान बेहतर ताकत और संतुलन देता है।

पॉवर ट्रैक यूरो 439 ब्रेक और स्टीयरिंग

पॉवरट्रैक यूरो 439 में मल्टी प्लेट तेल में डूबे डिस्क ब्रेक दिए गए हैं, जो बेहतर सुरक्षा और लंबी उम्र प्रदान करते हैं। ये ब्रेक कठिन परिस्थितियों में भी

अच्छा नियंत्रण बनाए रखते हैं। स्टीयरिंग के लिए इसमें पावर स्टीयरिंग और मैकेनिकल सिंगल ड्राप आर्म का विकल्प दिया गया है, जिससे ट्रैक्टर को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है और लंबे समय तक काम करने में थकान कम होती है।

पॉवर ट्रैक यूरो 439 पीटीओ

इस ट्रैक्टर में सिंगल 540 पीटीओ दिया गया है, जो विभिन्न कृषि उपकरणों जैसे रोटावेटर, थ्रेशर और स्प्रेयर को चलाने में सक्षम है। यह फीचर ट्रैक्टर को बहुउपयोगी बनाता है और किसानों के लिए इसे ज्यादा उपयोगी बनाता है।

पॉवर ट्रैक यूरो 439 फ्यूल कैपेसिटी

पॉवरट्रैक यूरो 439 में 50 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है, जिससे लंबे समय तक बिना रुकावट काम किया जा सकता है। इससे बार-बार डीजल भरने की जरूरत कम होती है और समय की बचत होती है।

पॉवर ट्रैक यूरो 439 डायमेंशन और वजन

इस ट्रैक्टर का वजन 1850 किलोग्राम है, जो इसे मजबूत और स्थिर बनाता है। इसका व्हीलबेस 2010 मिमी है और ग्राउंड क्लीयरेंस 400 मिमी है, जिससे यह ऊबड़-खाबड़ और असमान जमीन पर भी आसानी से काम कर सकता है। इसकी मजबूत बनावट खेत में बेहतर संतुलन और पकड़ प्रदान करती है।

पॉवर ट्रैक यूरो 439 हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग कैपेसिटी

पॉवरट्रैक यूरो 439 की लिफ्टिंग कैपेसिटी 1600 किलोग्राम है, जो भारी कृषि उपकरणों को आसानी से उठाने और उपयोग करने में सक्षम बनाती है। इसमें Automatic Depth & Draft Control सिस्टम दिया गया है, जिससे खेत में काम अधिक सटीक और प्रभावी होता है।

पॉवर ट्रैक यूरो 439 टायर साइज

इस ट्रैक्टर के फ्रंट टायर 6.00 x 16 और रियर टायर 13.6 x 28 साइज के हैं। ये टायर खेत में बेहतर ग्रिप और स्थिरता प्रदान करते हैं, जिससे फिसलन कम होती है और उत्पादकता बढ़ती है।

पॉवर ट्रैक यूरो 439 वारंटी और कीमत

पॉवरट्रैक यूरो 439 पर कंपनी 5000 घंटे या 5 साल की वारंटी देती है, जो इसकी विश्वसनीयता को दर्शाता है। इसकी कीमत ₹7.25 लाख से ₹7.55 लाख (एक्स-शोरूम) के बीच है, जो इसके फीचर्स और परफॉर्मेंस के अनुसार किफायती मानी जाती है। पॉवरट्रैक यूरो 439 एक मजबूत, भरोसेमंद और किफायती ट्रैक्टर है, जो छोटे और मध्यम किसानों के लिए बेहतरीन विकल्प है। इसका दमदार इंजन, बेहतर हाइड्रोलिक्स, कम मेंटेनेंस और आसान संचालन इसे खेत के सभी कार्यों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। यदि आप 40-45 HP श्रेणी में एक संतुलित और टिकाऊ ट्रैक्टर की तलाश कर रहे हैं, तो यह मॉडल आपके लिए एक अच्छा विकल्प साबित हो सकता है।

सोनालीका 35 आरएक्स सिकंदर: 39 एचपी श्रेणी में दमदार कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर

सोनालीका 35 RX सिकंदर: बेहतर परफॉर्मेंस और टिकाऊ डिजाइन

सोनालीका 35 आरएक्स सिकंदर एक ऐसा ट्रैक्टर है, जिसे खास तौर पर भारतीय किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। यह ट्रैक्टर मजबूती, दमदार परफॉर्मेंस और किफायती कीमत के कारण खेती के हर काम के लिए उपयुक्त माना जाता है। छोटे और मध्यम किसानों के लिए यह एक बेहतरीन विकल्प है, जो खेतों में जुताई, बुवाई, सिंचाई और ढुलाई जैसे कार्यों को आसानी से पूरा करता है। इसकी बनावट मजबूत है और लंबे समय तक टिकाऊ रहने की क्षमता इसे खास बनाती है।

दमदार इंजन और बेहतर प्रदर्शन

सोनालीका 35 आरएक्स सिकंदर ट्रैक्टर में 39 HP कैटेगरी का इंजन दिया गया है, जो 3 सिलेंडर के साथ आता है। इसका इंजन 1800 RPM पर काम करता है, जिससे यह ट्रैक्टर कम ईंधन में ज्यादा ताकत देता है। खेत में भारी कार्य करते समय भी इसका इंजन स्मूद और स्थिर रहता है। यह ट्रैक्टर कठिन परिस्थितियों में भी बेहतरीन प्रदर्शन करता है, जिससे किसान को काम में रुकावट नहीं आती।

पीटीओ पावर की ताकत

सोनालीका 35 आरएक्स सिकंदर का PTO HP 33.2 hp है, जो इसे कई कृषि उपकरणों के साथ काम करने में सक्षम बनाता है। रोटावेटर, थ्रेशर, स्प्रेयर और अन्य मशीनों को चलाने के लिए यह पर्याप्त शक्ति प्रदान करता है। उच्च पीटीओ पावर के कारण किसान एक ही ट्रैक्टर से कई प्रकार के कार्य कर सकते हैं, जिससे समय और लागत दोनों की बचत होती है।

गियर बॉक्स और ट्रांसमिशन सिस्टम

सोनालीका 35 आरएक्स सिकंदर ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर का गियर बॉक्स दिया गया है। यह गियर संयोजन खेत और सड़क दोनों स्थितियों में संतुलित गति प्रदान करता है। किसान अपनी जरूरत के अनुसार सही गियर का चयन कर सकता है, जिससे काम आसान और तेज हो जाता

है। इसका ट्रांसमिशन सिस्टम मजबूत और टिकाऊ है, जो लंबे समय तक बिना किसी समस्या के चलता है।

ब्रेकिंग सिस्टम और सुरक्षा

सोनालीका 35 आरएक्स सिकंदर ट्रैक्टर में ऑयल इमर्स्ड ब्रेक और ड्राई डिस्क ब्रेक (ऑप्शनल) का विकल्प मिलता है। ऑयल इमर्स्ड ब्रेक ज्यादा सुरक्षित और लंबे समय तक चलने वाले होते हैं, जबकि ड्राई डिस्क ब्रेक भी बेहतर कंट्रोल प्रदान करते हैं। यह ब्रेकिंग सिस्टम ट्रैक्टर को फिसलन भरे या ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर भी सुरक्षित बनाता है, जिससे किसान को अधिक आत्मविश्वास मिलता है।

क्लच और स्टीयरिंग विकल्प

सोनालीका 35 आरएक्स सिकंदर ट्रैक्टर में सिंगल और ड्यूल क्लच दोनों विकल्प दिए गए हैं। ड्यूल क्लच होने से ट्रैक्टर चलाते समय PTO को अलग से नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे काम में सुविधा बढ़ती है। इसके अलावा, इसमें मैकेनिकल और पावर स्टीयरिंग का विकल्प भी उपलब्ध है। पावर स्टीयरिंग से ट्रैक्टर चलाना आसान हो जाता है, खासकर लंबे समय तक काम करने पर थकान कम होती है।

लिफ्टिंग क्षमता और उपयोगिता

सोनालीका 35 आरएक्स सिकंदर की वजन उठाने की क्षमता 1800 किलोग्राम है। यह क्षमता इसे भारी कृषि उपकरणों को आसानी से उठाने और चलाने में सक्षम बनाती है। खेत की जुताई, बुवाई और अन्य कार्यों के लिए यह ट्रैक्टर पूरी तरह से उपयुक्त है। इसकी हाइड्रोलिक प्रणाली मजबूत है, जो हर तरह के कृषि कार्य को सुचारू रूप से पूरा करती है।

डिजाइन, व्हील ड्राइव और एयर फिल्टर

सोनालीका 35 आरएक्स सिकंदर ट्रैक्टर 2WD (टू व्हील ड्राइव) सिस्टम के साथ आता है, जो सामान्य खेती के लिए पर्याप्त है। इसका ड्राई टाइप एयर फिल्टर इंजन को धूल और गंदगी से बचाता है, जिससे इंजन की लाइफ बढ़ती है। ट्रैक्टर का डिज़ाइन आकर्षक और मजबूत है, जो ग्रामीण परिवेश के लिए पूरी तरह अनुकूल है। इसके बड़े टायर खेत में बेहतर ग्रिप प्रदान करते हैं।

कीमत और वारंटी

सोनालीका 35 आरएक्स सिकंदर ट्रैक्टर की कीमत 6.31 लाख रुपये से शुरू होकर 6.57 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) तक जाती है। यह कीमत इसके फीचर्स और प्रदर्शन के हिसाब से काफी उचित मानी जाती है। कंपनी इस ट्रैक्टर पर 2000 घंटे या 2 साल की वारंटी देती है, जो किसानों के लिए भरोसे का संकेत है। कुल मिलाकर, यह ट्रैक्टर कम बजट में एक मजबूत और भरोसेमंद विकल्प साबित होता है।

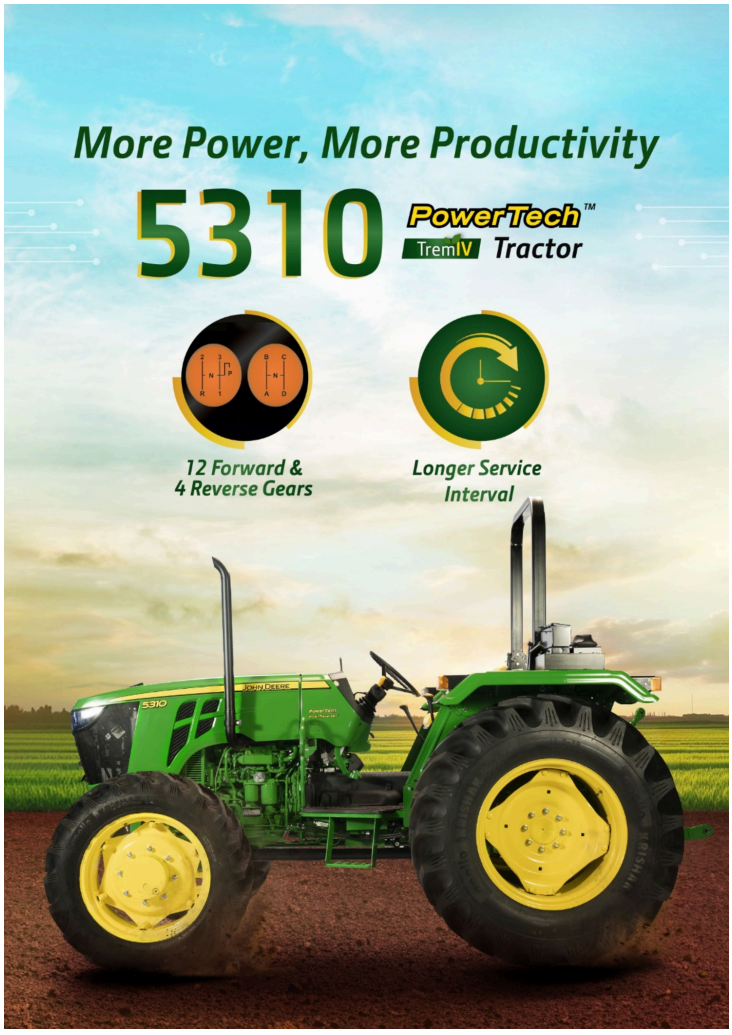

SONALIKA
जीतने का दम
दमदार ट्रैक्टर,
जो दे आपके भरोसे को दम
सोनालीका
सिकंदर
DI 42 P+
SONALIKA
DI-42
SONALIKA
2891 cc
दमदार इंजन,
205 Nm टॉर्क
ADVANCED 5G HYDRAULICS
2000 kg
लिफ़्ट कॅपेसिटी

ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई के लिए टॉप 4 कृषि मशीनें - जानें कीमत और स्पेसिफिकेशन

गर्मियों की जुताई के लिए आवश्यक 4 प्रमुख कृषि मशीनें

रबी फसलों की कटाई के बाद खेत खाली होते ही किसान अगली फसल की तैयारी में जुट जाते हैं। ग्रीष्मकालीन जुताई इस तैयारी का सबसे अहम हिस्सा है। अक्सर इसको नजरअंदाज कर दिया जाता है, लेकिन सही तरीके से की गई जुताई ही आने वाली फसल की मजबूत नींव रखती है। यह सिर्फ मिट्टी पलटने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि खेत को नया जीवन देने जैसा है।

ग्रीष्मकालीन जुताई क्यों जरूरी है?

गर्मी के मौसम में की जाने वाली जुताई का मुख्य उद्देश्य मिट्टी को ढीला करना, उसमें हवा का संचार बढ़ाना और खरपतवारों को नियंत्रित करना होता है। जब खेत की मिट्टी पलटी जाती है, तो नीचे की उपजाऊ परत ऊपर आ जाती है और ऊपरी परत नीचे चली जाती है। इससे मिट्टी का संतुलन बेहतर होता है। इसके अलावा, तेज धूप में खुली मिट्टी में रहने से कई हानिकारक कीट और रोगाणु नष्ट हो जाते हैं। इससे अगली फसल में रोगों का खतरा काफी हद तक कम हो जाता है। यही कारण है कि विशेषज्ञ ग्रीष्मकालीन जुताई को पैदावार बढ़ाने का एक प्रभावी उपाय मानते हैं।

हर खेत के लिए जरूरी नहीं

यह समझना भी उतना ही जरूरी है कि हर खेत में ग्रीष्मकालीन जुताई करना जरूरी नहीं होता। जिन खेतों की मिट्टी पहले से ही भुरभुरी और हल्की है, वहां अधिक जुताई करने से नुकसान भी हो सकता है। वहीं, जिन खेतों में मिट्टी सख्त हो गई हो, खरपतवार ज्यादा हों या फसल अवशेष बड़ी मात्रा में मौजूद हों, वहां यह प्रक्रिया बेहद जरूरी हो जाती है।खासकर काली मिट्टी और दोमट मिट्टी वाले क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन जुताई से बेहतर परिणाम देखने को मिलते हैं। इससे मिट्टी की कठोरता टूटती है और जड़ों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार होता है।

सही कृषि यंत्र का महत्व

आज के समय में खेती आधुनिक हो चुकी है और जुताई के लिए कई उन्नत कृषि यंत्र उपलब्ध हैं। सही यंत्र का चयन करना उतना ही जरूरी है जितना जुताई करना। गलत उपकरण से न केवल लागत बढ़ती है, बल्कि मिट्टी की संरचना भी खराब हो सकती है।

आइए जानते हैं ग्रीष्मकालीन जुताई में इस्तेमाल होने वाले प्रमुख कृषि यंत्रों के बारे में-

1. एम बी प्लाऊ (Mould Board Plough)

यह जुताई के सबसे पारंपरिक और प्रभावी उपकरणों में से एक है। इसका मुख्य काम मिट्टी को पूरी तरह पलटना होता है। जब यह खेत में चलता है, तो मिट्टी की ऊपरी परत नीचे चली जाती है और नीचे की परत ऊपर आ जाती है।

इससे कई फायदे होते हैं-

- खरपतवार पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं
- मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है
- कीट और रोग नियंत्रण में मदद मिलती है

आजकल इसका रिवर्सिबल मॉडल ज्यादा प्रचलित है, जो समय और मेहनत दोनों बचाता है।

कीमत: ₹50,000 से ₹90,000

2. डिस्क प्लाऊ (Disc Plough)

यदि खेत की मिट्टी बहुत कठोर, सूखी या पथरीली है, तो डिस्क प्लाऊ सबसे बेहतर विकल्प माना जाता है। इसमें गोलाकार डिस्क होती हैं, जो मिट्टी को काटते हुए आगे बढ़ती हैं।

डिस्क प्लाऊ के फायदे-

- गहरी जुताई में सक्षम
- फसल अवशेषों को मिट्टी में अच्छी तरह मिलाता है
- कठोर जमीन में भी आसानी से काम करता है

यह खासतौर पर उन क्षेत्रों में उपयोगी है जहां मिट्टी का कटाव अधिक होता है।

कीमत: ₹90,000 से ₹1,45,000

3. सब सॉइलर (Subsoiler)

कई बार खेतों में लगातार खेती करने से मिट्टी के नीचे एक कठोर परत बन जाती है, जिसे हार्ड पैन कहा जाता है। यह परत पानी और जड़ों के विकास को रोकती है।

सब सॉइलर इस समस्या का समाधान करता है-

- गहराई तक जाकर मिट्टी को तोड़ता है
- जल निकास सुधारता है
- जड़ों को गहराई तक फैलने में मदद करता है

यह उन खेतों के लिए बेहद उपयोगी है जहां लंबे समय से जुताई नहीं हुई हो।

कीमत: ₹50,000 से ₹1,00,000

4. चीजल प्लाऊ (Chisel Plough)

यह उपकरण मिट्टी को पूरी तरह पलटे बिना उसे ढीला करता है। यानी यह मिट्टी की संरचना को बनाए रखते हुए उसे हवादार बनाता है।

चीजल प्लाऊ के मुख्य लाभ-

- मिट्टी का कम नुकसान
- फसल अवशेष सतह पर बने रहते हैं
- जल संरक्षण में मदद

यह उन किसानों के लिए अच्छा विकल्प है, जो न्यूनतम जुताई (Minimum Tillage) अपनाना चाहते हैं।

कीमत: ₹45,000 से ₹65,000

कैसे चुनें सही यंत्र?

हर खेत की जरूरत अलग होती है, इसलिए एक ही उपकरण सभी के लिए सही नहीं हो सकता। यंत्र चुनते समय इन बातों का ध्यान रखें-

- मिट्टी का प्रकार (काली, दोमट या रेतीली)
- खेत में नमी की मात्रा
- खरपतवार और अवशेषों की स्थिति
- जुताई की गहराई की जरूरत

यदि मिट्टी बहुत सख्त है, तो डिस्क प्लाऊ या सब सॉइलर बेहतर रहेगा। वहीं, सामान्य जुताई के लिए एम बी प्लाऊ एक अच्छा विकल्प है।

ग्रीष्मकालीन जुताई पैदावार बढ़ाने में कैसे मदद करती है?

ग्रीष्मकालीन जुताई का सीधा असर फसल उत्पादन पर पड़ता है। इसके जरिए—

- मिट्टी में पोषक तत्वों का संतुलन बेहतर होता है
- पानी का अवशोषण बढ़ता है
- जड़ों का विकास मजबूत होता है
- कीट और रोग कम होते हैं

इन सभी कारणों से फसल की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में सुधार होता है।

निष्कर्ष

ग्रीष्मकालीन जुताई को अगर सही तरीके और सही समय पर किया जाए, तो यह खेती की सफलता का मजबूत आधार बन सकती है। सही कृषि यंत्र का चयन और उसका सही उपयोग न केवल मिट्टी की सेहत सुधारता है, बल्कि किसानों की लागत को भी संतुलित रखता है। आज के आधुनिक दौर में, जहां खेती को लाभकारी बनाना चुनौती है, वहां ऐसी तकनीकों और उपकरणों का सही इस्तेमाल ही किसानों को आगे बढ़ा सकता है। इसलिए अगली फसल की तैयारी करते समय ग्रीष्मकालीन जुताई को नजरअंदाज न करें। यही बेहतर पैदावार और अधिक आय की कुंजी है।

बकरी पालन योजना 2026: 90% तक सब्सिडी, आवेदन और लाभ की पूरी जानकारी

बकरी पालन पर 90 प्रतिशत अनुदान - जानें पूरी जानकारी

उत्तर प्रदेश सरकार ने ग्रामीण विकास और किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इस पहल के तहत बकरी पालन को बढ़ावा देने के लिए एक नई और आकर्षक योजना शुरू की गई है, जिसमें छोटे और सीमांत किसानों के साथ-साथ आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को 90% तक सब्सिडी प्रदान की जाएगी। यह योजना खासतौर पर उन लोगों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है, जो कम निवेश में अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं।

योजना का मुख्य उद्देश्य

योगी सरकार की इस योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसर बढ़ाना और किसानों की आय को स्थायी रूप से मजबूत करना

है। बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है, जिसे कम पूंजी में शुरू किया जा सकता है और इसमें जोखिम भी अपेक्षाकृत कम होता है। यही कारण है कि सरकार इस क्षेत्र को प्राथमिकता दे रही है। इसके माध्यम से न केवल किसानों को आर्थिक मजबूती मिलेगी, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई गति प्राप्त होगी।

पहले से अधिक सब्सिडी: अब 90% तक लाभ

पहले बकरी पालन योजनाओं (Goat Farming) में किसानों को केवल 50% तक सब्सिडी मिलती थी। उदाहरण के तौर पर:

100 बकरियों और 20 बकरों की यूनिट पर 50% अनुदान

10 बकरियों और 2 बकरों की यूनिट पर भी 50% सहायता

लेकिन अब सरकार ने इस योजना को और अधिक लाभकारी बनाते हुए छोटे यूनिट्स पर सब्सिडी बढ़ाकर 90% तक कर दी है। इससे खासतौर पर गरीब और सीमांत किसानों के लिए यह व्यवसाय शुरू करना बेहद आसान हो गया है।

इस योजना का किन्हें मिलेगा लाभ?

बकरी पालन योजना में समाज के कमजोर और वंचित वर्गों को विशेष प्राथमिकता दी जा रही है। इनमें शामिल हैं:-

- अनुसूचित जाति (SC)
- अनुसूचित जनजाति (ST)
- आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS)
- महिलाएं

सरकार का उद्देश्य इन वर्गों को आत्मनिर्भर बनाना है। विशेष रूप से महिलाओं को इस योजना से जोड़ने पर जोर दिया जा रहा है, ताकि वे घर बैठे ही अपनी आय का स्रोत बना सकें और परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकें।

प्रशिक्षण के साथ मिलेगा संपूर्ण सहयोग

इस योजना की एक बड़ी खासियत यह है कि इसमें केवल आर्थिक सहायता ही नहीं, बल्कि प्रशिक्षण भी शामिल है। लाभार्थियों को बकरी पालन से जुड़ी पूरी जानकारी दी जाएगी, जैसे:-

- बकरियों की सही देखभाल
- संतुलित पोषण और आहार
- सामान्य बीमारियों की पहचान और बचाव
- बाजार में उत्पाद बेचने के तरीके

यह प्रशिक्षण किसानों को व्यवसाय को बेहतर ढंग से संचालित करने में मदद करेगा। अक्सर देखा गया है कि बिना सही जानकारी के पशुपालन शुरू करने पर नुकसान हो सकता है, लेकिन इस योजना में प्रशिक्षण की सुविधा से सफलता की संभावना काफी बढ़ जाती है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिलेगा नया बल

बकरी पालन ग्रामीण क्षेत्रों में लंबे समय से एक पारंपरिक व्यवसाय रहा है, लेकिन अब इसे आधुनिक तकनीकों और बेहतर प्रबंधन के साथ विकसित किया जा रहा है। यह योजना कई स्तरों पर लाभ पहुंचाएगी:

- किसानों की आय में वृद्धि
- गांवों में रोजगार के नए अवसर
- ग्रामीण पलायन में कमी
- स्थानीय बाजारों का विकास

जब लोगों को अपने गांव में ही रोजगार मिलने लगेगा, तो शहरों की ओर पलायन भी कम होगा, जिससे सामाजिक और आर्थिक संतुलन बेहतर होगा।

कम लागत, ज्यादा मुनाफा

बकरी पालन का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसमें निवेश कम होता है और मुनाफा अच्छा मिल सकता है। बकरियां जल्दी प्रजनन करती हैं और उनका पालन भी आसान होता है। इसके अलावा:-

- दूध और खाद से अतिरिक्त आय
- कम जगह में भी पालन संभव

- बाजार में हमेशा मांग

इन सभी कारणों से यह व्यवसाय छोटे किसानों के लिए बेहद उपयुक्त है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, 90% तक सब्सिडी वाली यह योजना किसानों और कमजोर वर्गों के लिए एक बड़ा अवसर लेकर आई है। कम लागत, सरकारी सहयोग और प्रशिक्षण के साथ यह योजना न केवल आय बढ़ाने में मदद करेगी, बल्कि लोगों को आत्मनिर्भर बनने का भी मौका देगी। जो किसान या ग्रामीण इस क्षेत्र में कदम रखने की सोच रहे हैं, उनके लिए यह सही समय है कि वे इस योजना का लाभ उठाएं और अपने भविष्य को आर्थिक रूप से मजबूत बनाएं।

दुग्ध स्वर्ण महोत्सव 2026: परंपरा, प्रगति और समृद्धि के 50 वर्ष

दुग्धशाला विकास विभाग के 50 साल पूरे

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में 17 और 18 अप्रैल को आयोजित होने जा रहा दुग्ध स्वर्ण महोत्सव-2026 डेयरी क्षेत्र के लिए एक ऐतिहासिक अवसर साबित होने जा रहा है। यह आयोजन इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान के मार्स हॉल में किया जाएगा, जहां प्रदेशभर से हजारों पशुपालक, उद्यमी और निवेशक एकत्र होंगे। दुग्धशाला विकास विभाग के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित यह कार्यक्रम न केवल एक उत्सव है, बल्कि डेयरी सेक्टर के भविष्य की दिशा तय करने वाला मंच भी है।

डेयरी सेक्टर को मजबूत बनाने की पहल

इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य डेयरी क्षेत्र को सशक्त बनाना और इसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना है। सरकार का प्रयास है कि किसानों और पशुपालकों को आधुनिक तकनीकों और योजनाओं से जोड़ा जाए ताकि उनकी आय में वृद्धि हो सके। कार्यक्रम के माध्यम से डेयरी उत्पादन, प्रोसेसिंग और वितरण प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया जाएगा।

सरकारी योजनाओं से किसानों को जोड़ने का प्रयास

महोत्सव में विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी, जिससे किसान सीधे लाभान्वित हो सकें। विशेष रूप से नन्द बाबा दुग्ध मिशन जैसी योजनाओं को प्रमुखता दी जाएगी। इन योजनाओं के तहत किसानों को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराया जाता है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलने की उम्मीद है।

निवेश को बढ़ावा देने के लिए विशेष पहल

कार्यक्रम के दौरान डेयरी सेक्टर में निवेश को आकर्षित करने के लिए सिंगल विंडो सिस्टम के माध्यम से एमओयू (MoU) किए जाएंगे। इससे निवेशकों को आसान प्रक्रिया के जरिए उद्योग में भागीदारी का अवसर मिलेगा। यह पहल डेयरी उद्योग में नए स्टार्टअप्स और बड़े निवेशकों को जोड़ने में सहायक होगी।

आधुनिक तकनीकों और नवाचार पर जोर

महोत्सव में विशेषज्ञों द्वारा डेयरी क्षेत्र से जुड़ी आधुनिक तकनीकों और नवाचारों पर विस्तृत चर्चा की जाएगी। इसमें पशुपालन के नए तरीके, दूध उत्पादन बढ़ाने की तकनीकें, और प्रोसेसिंग में सुधार जैसे विषय शामिल होंगे। इन जानकारियों से किसानों को अपने व्यवसाय को अधिक लाभकारी बनाने में मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जुड़ाव

यह आयोजन केवल उत्तर प्रदेश तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि देश-विदेश के लाखों डेयरी किसान और निवेशक ऑनलाइन माध्यम से भी इससे जुड़ेंगे। इससे यह मंच अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डेयरी सेक्टर को जोड़ने का कार्य करेगा। विभिन्न देशों के विशेषज्ञों के अनुभव और तकनीकों का आदान-प्रदान भी इस आयोजन की विशेषता होगी।

सफलता की कहानियों और सम्मान समारोह का आयोजन

महोत्सव के दौरान प्रगतिशील पशुपालकों और निवेशकों की सफलता की कहानियों को साझा किया जाएगा। इन कहानियों से अन्य किसानों को प्रेरणा मिलेगी। साथ ही उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया जाएगा, जिससे उनके योगदान को मान्यता मिलेगी और अन्य लोगों को भी आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिलेगा।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सतत विकास पर फोकस

कार्यक्रम में गौशालाओं, गोबर गैस और स्वदेशी नस्ल के पशुपालन के महत्व पर विशेष जोर दिया जाएगा। ये पहल न केवल पर्यावरण के लिए लाभकारी हैं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर भी पैदा करती हैं। इस प्रकार दुग्ध स्वर्ण महोत्सव-2026 एक समग्र विकास मॉडल प्रस्तुत करता है, जो डेयरी सेक्टर को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

टॉप 5 डेयरी बिजनेस आइडिया: किसान करें लाखों की कमाई

कम लागत में शुरू होने वाले टॉप 5 डेयरी बिजनेस

आज के समय में डेयरी से जुड़े बिजनेस कम निवेश में अधिक मुनाफा देने वाले साबित हो रहे हैं। दूध और उससे बने उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है, जिससे यह क्षेत्र उद्यमियों के लिए आकर्षक बन गया है। खास बात यह है, कि इन बिजनेस को छोटे स्तर से शुरू करके धीरे-धीरे बड़े स्तर तक बढ़ाया जा सकता है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में इनकी अच्छी संभावनाएं हैं। अगर आप डेयरी संबंधित व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं, तो मेरीखेती के इस लेख में आज हम आपको पाँच ऐसे डेयरी से जुड़े व्यवसायों के बारे जानकारी प्रदान करेंगे जो आपको कम समय कम निवेश में अधिक मुनाफा देने में मददगार साबित होंगे। इन टॉप 5 बिजनेस में डेयरी प्रोडक्ट्स बिजनेस, आइसक्रीम बिजनेस, चॉकलेट बनाने का बिजनेस, दूध संग्रहण केंद्र और चारा बिजनेस शामिल है।

डेयरी प्रोडक्ट्स बिजनेस की बढ़ती मांग

दूध, दही, छाछ, घी और पनीर जैसे डेयरी उत्पाद हर घर की जरूरत हैं। इनकी मांग सालभर बनी रहती है, जिससे यह बिजनेस स्थिर आय का स्रोत बन सकता है। शुरुआत में छोटे स्तर पर उत्पादन करके स्थानीय बाजार में सप्लाई की जा सकती है। जैसे-जैसे ग्राहक बढ़ते हैं, आप उत्पादन और वितरण दोनों को बढ़ा सकते हैं।

सरकारी सहायता और सब्सिडी का लाभ

डेयरी बिजनेस शुरू करने के लिए सरकार भी कई योजनाएं चलाती है। नाबार्ड योजना के तहत डेयरी खोलने के लिए लोन पर सब्सिडी दी जाती है। सामान्य वर्ग को 25% प्रतिशत और अनुसूचित जाति/जनजाति को 33% प्रतिशत तक सब्सिडी मिल सकती है। इसके अलावा बैंक से 10 लाख रुपए तक का लोन भी उपलब्ध है, जिसके लिए एक सही प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करनी होती है।

आइसक्रीम बिजनेस में अवसर

आइसक्रीम बिजनेस खासकर गर्मियों में काफी तेजी से चलता है। दूध से बनी आइसक्रीम की कई फ्लेवर और वैरायटी बाजार में उपलब्ध हैं, जिससे ग्राहकों को आकर्षित करना आसान होता है। आप एक छोटा आइसक्रीम पार्लर खोलकर या मिनी प्लांट लगाकर इस बिजनेस की शुरुआत कर सकते हैं। अगर आप नए फ्लेवर और ऑर्गेनिक विकल्प देते हैं, तो आपकी बिक्री तेजी से बढ़ सकती है। भारत में आइसक्रीम को बहुत बड़ी संख्या में लोग खाना पसंद करते हैं। इसलिए अगर आप आइसक्रीम का व्यवसाय शुरू करते हैं तो यह आपके लिए काफी फायदे का विकल्प साबित होगा।

चॉकलेट बनाने का लाभदायक व्यवसाय

चॉकलेट का बिजनेस भी तेजी से बढ़ रहा है, खासकर बच्चों और युवाओं के बीच इसकी लोकप्रियता बहुत अधिक है। इस क्षेत्र में बड़े ब्रांड्स के साथ-साथ छोटे लोकल ब्रांड भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। आप घर से ही चॉकलेट बनाना शुरू कर सकते हैं और धीरे-धीरे अपना ब्रांड स्थापित कर सकते हैं। इसके अलावा रॉ चॉकलेट बनाकर बड़ी कंपनियों को सप्लाई करना भी एक अच्छा विकल्प है। अगर आपने अच्छी क्वालिटी की चॉकलेट बनाकर बाजार में बेचना शुरू की तो आप काफी शानदार कमाई कर सकते हैं।

दूध संग्रहण केंद्र से कमाई

दूध संग्रहण केंद्र खोलना भी एक बेहतरीन बिजनेस आइडिया है। इसमें आप स्थानीय किसानों से दूध खरीदकर बड़ी कंपनियों को सप्लाई कर सकते हैं। इसके लिए आपको ऐसी जगह चुननी चाहिए जहां किसान और ग्राहक आसानी से पहुंच सकें। इस बिजनेस में कम कीमत पर दूध खरीदकर उसे बाजार मूल्य पर बेचकर अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। यह बिजनेस कम जोखिम और अधिक मुनाफे का एक शानदार जरिया है।

चारा बिजनेस की बढ़ती जरूरत

पशुपालन के बढ़ते चलन के साथ चारे की मांग भी तेजी से बढ़ रही है। खासकर गर्मियों में पशुओं के लिए हरे चारे की कमी हो जाती है। ऐसे में चारा उत्पादन और बिक्री का बिजनेस काफी फायदेमंद हो सकता है। आप लीज पर जमीन लेकर ढेंचा, जई, बरसीम, ज्वार, बाजरा और मक्का जैसी चारा फसलें उगाकर अच्छा लाभ कमा सकते हैं। पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में चारे की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अगर आप पशु को संतुलित और पौष्टिक चारा खिलाओगे तो निश्चित रूप से पशु आपको अधिक दूध देगा। परिणामस्वरूप आपकी आय में भी वृद्धि होगी।

सफल बिजनेस के लिए रणनीति

इन सभी बिजनेस में सफलता पाने के लिए सही योजना, गुणवत्ता और मार्केटिंग बहुत जरूरी है। शुरुआत छोटे स्तर से करें, लागत को नियंत्रित रखें और ग्राहकों की जरूरत के अनुसार प्रोडक्ट तैयार करें। यदि आप सही दिशा में मेहनत करते हैं और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाते हैं, तो ये बिजनेस

आपको लंबे समय तक अच्छा मुनाफा दे सकते हैं।

निष्कर्ष

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की अधिकांश आबादी कृषि व पशुपालन के माध्यम से ही अपनी आजीविका चलाती है। साथ ही, भारत डेयरी संबंधित उत्पादों का एक बड़ा उपभोक्ता है। ऐसे में मेरीखेती के इस लेख में बताए गए डेयरी संबंधित टॉप 5 व्यवसाय आपके लिए एक बेहतर आय का जरिया साबित हो सकते हैं। उपरोक्त टॉप 5 कृषि व्यवसायों को कर आप काफी अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। आप अपने क्षेत्र, रूची और बजट के अनुरूप व्यवसाय का चयन कर शुरू कर सकते हैं।

सवाई माधोपुर में मेरीखेती की अप्रैल किसान पंचायत का भव्य आयोजन

अप्रैल माह की मेरीखेती किसान पंचायत

मेरीखेती हर माह किसान और कृषि वैज्ञानिकों के परस्पर संवाद के लिए मेरीखेती किसान पंचायत का आयोजन करती है। अप्रैल महीने की मासिक किसान पंचायत का आयोजन किशन चौधरी की अध्यक्षता में गांव सेवा, ब्लॉक गाजीपुर, जिला सवाई माधोपुर (राजस्थान) में किया गया। अप्रैल माह की किसान पंचायत का विषय ग्रीष्मकालीन फसलों के लिए उन्नत उत्पादन प्रौद्योगिकियाँ रहा। अप्रैल माह की किसान पंचायत में वरिष्ठ और अनुभवी कृषि विशेषज्ञों, कृषि वैज्ञानिकों और प्रगतिशील किसानों ने शिरकत की।

किसान पंचायत में मौजूद रहने वाले कृषि वैज्ञानिक निम्नलिखित हैं:-

1. डॉ. शशि मीना, वैज्ञानिक, पौधा शरीर क्रिया विज्ञान प्रभाग
2. डॉ. इंदु चोपड़ा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन प्रभाग, ICAR-IARI
3. डॉ. संदीप कुमार, वैज्ञानिक, पर्यावरण विज्ञान प्रभाग
4. डॉ. ललित कृष्ण मीना, वैज्ञानिक, ICAR-भारतीय सरसों एवं रेपसीड अनुसंधान संस्थान
5. श्री मुकेश मीना, तकनीकी अधिकारी, पौधा शरीर क्रिया विज्ञान प्रभाग
6. श्री पिंटू मीना, एएओ, गंगापुर
7. श्री अमित मीना, एएओ, सेवा
8. श्री सियाराम मीना, एओ, गंगापुर

मेरी खेती किसान पंचायत का उद्देश्य

गर्मी का मौसम किसानों के लिए चुनौतीपूर्ण होने के साथ-साथ अवसरों से भी भरा होता है। उच्च तापमान, पानी की कमी और कीट-रोगों का बढ़ता प्रकोप खेती को कठिन बना देता है, लेकिन यदि किसान उन्नत उत्पादन प्रौद्योगिकियों को अपनाएं तो वे इस मौसम में भी अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। इसी उद्देश्य से “मेरी खेती किसान पंचायत” का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र के किसानों ने बड़ी संख्या में भाग लिया और विशेषज्ञों से सीधे संवाद कर महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

कृषि वैज्ञानिक डॉ. शशि मीना

मेरीखेती किसान पंचायत में कृषि वैज्ञानिकों और

अधिकारियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और अधिक प्रभावी बना दिया। कार्यक्रम में डॉ. शशि मीना, वैज्ञानिक, पौधा शरीर क्रिया विज्ञान प्रभाग ने फसलों की शारीरिक क्रियाओं और गर्मी में पौधों के व्यवहार के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि गर्मी के समय पौधों में पानी की कमी के कारण तनाव उत्पन्न होता है, जिससे उनकी वृद्धि और उत्पादन प्रभावित होता है। इससे बचने के लिए समय पर सिंचाई, मल्चिंग और छाया प्रबंधन आवश्यक है।

कृषि वैज्ञानिक डॉ. इंदु चोपड़ा

डॉ. इंदु चोपड़ा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन प्रभाग, ICAR-IARI ने मिट्टी की गुणवत्ता और पोषक तत्वों के संतुलन पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि ग्रीष्मकालीन फसलों के लिए हल्की और जल निकास वाली मिट्टी उपयुक्त होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि वे मिट्टी परीक्षण करवाकर ही उर्वरकों का प्रयोग करें ताकि फसल को आवश्यक पोषण मिल सके और लागत भी कम हो।

कृषि वैज्ञानिक डॉ. संदीप कुमार

डॉ. संदीप कुमार, वैज्ञानिक, पर्यावरण विज्ञान प्रभाग ने जल संरक्षण और पर्यावरण संतुलन की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ड्रिप इरिगेशन और स्प्रिंकलर प्रणाली जैसे आधुनिक सिंचाई साधनों का उपयोग कर किसान पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही, उन्होंने जैविक खेती और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर भी जोर दिया।

कृषि वैज्ञानिक डॉ. ललित कृष्ण मीना

डॉ. ललित कृष्ण मीना, वैज्ञानिक, ICAR-भारतीय सरसों एवं रेपसीड अनुसंधान संस्थान ने उन्नत बीजों और किस्मों के चयन पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि गर्मी के मौसम में जल्दी पकने वाली और सूखा सहनशील किस्मों का चयन करना चाहिए। इससे फसल जोखिम कम होता है और उत्पादन बढ़ता है।

तकनीकी अधिकारी मुकेश मीना

मेरीखती किसान पंचायत कार्यक्रम में तकनीकी अधिकारी श्री मुकेश मीना ने फसल प्रबंधन के व्यावहारिक पहलुओं पर जानकारी दी। उन्होंने बीज उपचार, पौध संरक्षण और समय-समय पर निगरानी के महत्व को समझाया। उन्होंने बताया कि बीज उपचार से फसल की शुरुआती वृद्धि मजबूत होती है और रोगों का खतरा कम होता है।

एओ और एएओ

श्री पिंटू मीना, एएओ, गंगापुर और श्री अमित मीना, एएओ, सेवा में किसानों को सरकारी योजनाओं और अनुदानों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा कई योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनका लाभ उठाकर किसान आधुनिक उपकरण और तकनीकों को अपना सकते हैं। श्री सियाराम मीना, एओ, गंगापुर ने किसानों को कृषि विभाग की सेवाओं और सहायता के बारे में बताया।

बड़ी संख्या में मौजूद रहे किसान

किसान पंचायत में क्षेत्र के कई किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। किसानों ने अपने अनुभव साझा किए और विशेषज्ञों से अपनी समस्याओं का समाधान भी प्राप्त किया। कई किसानों ने बताया कि उन्हें गर्मी के मौसम में सिंचाई और कीट नियंत्रण में कठिनाई होती है। विशेषज्ञों ने उन्हें उचित तकनीकों और उपायों के बारे में मार्गदर्शन दिया।

ग्रीष्मकालीन फसलों के लिए प्रमुख उन्नत प्रौद्योगिकियाँ:-

उन्नत बीज और किस्मों का चयन

सूखा सहनशील और कम अवधि में पकने वाली किस्मों का चयन करना चाहिए।

सिंचाई प्रबंधन

ड्रिप और स्प्रिंकलर प्रणाली अपनाकर पानी की बचत और बेहतर उपयोग किया जा सकता है।

मल्चिंग तकनीक
भूमि की नमी बनाए रखने के लिए प्लास्टिक या जैविक मल्च का उपयोग करें।

उर्वरक प्रबंधन
संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें और जैव उर्वरकों को बढ़ावा दें।

कीट एवं रोग नियंत्रण
समेकित कीट प्रबंधन (IPM) तकनीक अपनाएं।

मृदा स्वास्थ्य सुधार
जैविक खाद और हरी खाद का प्रयोग कर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाएं।

जल संरक्षण तकनीक
वर्षा जल संचयन और सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली का उपयोग करें।

निष्कर्ष

मेरीखेती किसान पंचायत का मुख्य उद्देश्य किसानों को नई तकनीकों से जोड़ना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना था। कार्यक्रम के अंत में किसानों ने यह संकल्प लिया कि वे उन्नत कृषि तकनीकों को अपनाकर अपनी आय बढ़ाएंगे और खेती को अधिक लाभकारी बनाएंगे।
अंततः, “मेरी खेती किसान पंचायत” न केवल ज्ञान का मंच बना, बल्कि किसानों और वैज्ञानिकों के बीच संवाद का एक सशक्त माध्यम भी साबित हुआ। ऐसे आयोजनों से किसानों को नई दिशा मिलती है और वे आधुनिक कृषि की ओर अग्रसर होते हैं।

किसानों को राहत: गुणवत्ता नियमों में ढील, खरीद स्लॉट सुनिश्चित

राजस्थान सरकार का सराहनीय निर्णय

राजस्थान में गेहूं खरीद को लेकर किसानों की बढ़ती समस्याओं को देखते हुए सरकार ने अहम फैसला लिया है। अब बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि से प्रभावित गेहूं को भी न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर खरीदा जाएगा। साथ ही, गुणवत्ता मानकों में नरमी और हर किसान के लिए खरीद स्लॉट तय करने के निर्देश दिए गए हैं, जिससे किसानों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। कोटा स्थित सर्किट हाउस में आयोजित उच्च स्तरीय बैठक में गेहूं खरीद की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की गई। बैठक में जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने इस बात पर नाराजगी जताई कि मामूली गुणवत्ता खामियों के कारण बड़ी मात्रा में गेहूं को अस्वीकार किया जा रहा है। यह भी सामने आया कि मौसम की मार झेल रहे किसानों को तकनीकी कारणों से अतिरिक्त परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

बैठक में दिए गए अहम निर्देश

बैठक के दौरान सांसद ओम बिरला और मंत्री हीरालाल नागर ने अधिकारियों को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि गेहूं खरीद में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। सभी खरीद केंद्र पूरी क्षमता से संचालित हों और कोई भी किसान अपनी उपज बेचने से वंचित न रहे। उन्होंने गुणवत्ता जांच में अनावश्यक सख्ती से बचने, समय पर स्लॉट उपलब्ध कराने और प्रक्रिया को तेज व पारदर्शी बनाने पर जोर दिया। साथ ही भंडारण और परिवहन व्यवस्था को मजबूत करने के निर्देश भी दिए गए।

बारिश और ओलावृष्टि से प्रभावित गेहूं पर राहत

बैठक में यह निर्णय लिया गया कि बारिश और ओलावृष्टि से प्रभावित गेहूं की भी MSP पर खरीद की जाएगी। इसके लिए गुणवत्ता मानकों में आवश्यक ढील देने के निर्देश केंद्र स्तर पर भेज दिए गए हैं और जल्द ही औपचारिक आदेश जारी होने की संभावना है। इससे प्रभावित किसानों को सीधा लाभ मिलेगा।

हर किसान की उपज खरीदी जाएगी

अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि सभी खरीद केंद्र पूरी क्षमता से कार्य करें और किसी भी किसान को बाहर न रखा जाए। हर किसान को खरीद के लिए स्लॉट उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे तय समय पर उपज की बिक्री हो सके और मंडियों में भीड़ नियंत्रित रहे।

अतिरिक्त बारदाने की व्यवस्था

व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए प्रशासन ने अगले सात दिनों में अतिरिक्त बारदाने की व्यवस्था करने का निर्णय लिया है। इसके अलावा छुट्टियों में भी वेयरहाउस खुले रखने के निर्देश दिए गए हैं। रेलवे रैक की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया गया है, ताकि परिवहन में देरी न हो।

मामूली खामियों पर गेहूं रिजेक्ट नहीं होगा

बैठक में यह मुद्दा भी सामने आया कि कई जगहों पर दानों के हल्के कालेपन या सफेदी के कारण गेहूं को अस्वीकार किया जा रहा है। इस पर सख्त रुख अपनाते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि ऐसे मामलों में संवेदनशीलता बरती जाए और किसानों को अनावश्यक रूप से परेशान न किया जाए।

मंडियों का दौरा कर लिया जायजा

बैठक के बाद अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों ने मंडियों का दौरा कर जमीनी स्थिति का निरीक्षण किया। किसानों ने बताया कि वे लंबे समय से अपनी उपज बेचने का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन रिजेक्शन और स्लॉट की कमी के कारण उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। प्रशासन ने भरोसा दिलाया कि अब प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाया जाएगा।

किसानों के लिए विशेष सुविधाएं लागू

किसानों की सुविधा के लिए कुछ विशेष प्रावधान भी किए जा रहे हैं। बुजुर्ग किसानों को बायोमेट्रिक प्रक्रिया में छूट दी जाएगी, जिससे उनके परिवार के सदस्य उनकी ओर से औपचारिकताएं पूरी कर सकें। निजी वेयरहाउस का उपयोग कर भंडारण क्षमता बढ़ाई जाएगी और स्लॉट बुकिंग के साथ ही तुलाई का समय पहले से निर्धारित किया जाएगा।

सरकार का राहतभरा कदम

कुल मिलाकर, यह निर्णय किसानों के लिए राहत देने वाला साबित हो सकता है। इससे न केवल मौसम से प्रभावित फसल को उचित मूल्य मिलेगा, बल्कि खरीद प्रक्रिया भी अधिक पारदर्शी और तेज होगी। उम्मीद है कि इन कदमों से किसानों की समस्याएं कम होंगी और उन्हें उनकी मेहनत का पूरा लाभ मिल सकेगा।

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501

Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010